॥ श्रीहरिः ॥

22

पूज्यपादआचार्यरत्नगोस्वामिकुलकौस्तुभ
श्री १०८ श्रीगोकुलनाथजीमहाराजश्री
की आज्ञासूं

गंगादसमी, स्नानयात्रा, रथयात्रा कसूंभी छठ के पद.

मकर संक्रात, खसखाना, परदनी आडबंध, कुंज मुकुट, उष्णकाल, पनघट, फेंटा,
पिछोरा, चंदन, नरसिंह चतुरदसी, गंगादसमी, गंगाजीकी अष्टपदी, छाक नाव,
नाव, तनियां, जेष्ठ सुक्ला १४, स्नान यात्रा ज्येष्ठाभिषेक, सूहा बिलावल,
वर्षाऋतु, हमीरके, रथयात्रा, कसूंभी छठ, जमुनाजी के पद अलग अलग ताल सहित.

श्रीमद् गोकुल के प्रसिद्ध कीर्तनियाजी मुरलीधरसुत, पं. जगन्नाथजीने
संशोधन कीनो है

-सुदामापुरीस्थ-
परमभगवदीय कीर्तनियाजी ठा. नारायणदास लक्ष्मीदास
की अपूर्व हार्दिक सहायतासूं

—: खंभालीआस्थ :—
ठा० त्रीकमदास चकुभाई ने प्रकट कीनो है.
२७-२९ कोलभाट लैन बम्बई नं. २

प्रकाशकनें सर्व हक्क स्वाधीन रख्खें है.

यह पुस्तक श्री अच्युत मुद्रणालय, २३१ कालबादेवी रोड, बम्बईमें छपी.

समय राधिका गोबिंद राजे कुंजन में छूटत फुहारे अग्र असमान भेंटे से ॥ १ ॥ खस के अतर लाय खुसि कें सुनति राग रस के सारंग गावे 'सूर दास' जेटें से ॥ अली भुज भेटें जुही झालर लपेटें होत पंखन झपेटें ग्रीषम चपेटें से ॥ २ ॥ ॥ १३ ॥ 卐 ॥ ताल झुमरो ॥ बन बन माधौ जू की डोलन ॥ इत चातक इत कोकिला कूजत इत मोरन की बोलन ॥ १ ॥ कबहुं पीत पट लेत हाथ सौं बारबार उढावत ॥ कबहू कहत लागत तू मोसो बांह उठाय बुलावत ॥ २ ॥ आपुन हँसति हसावति ग्वालिन नौतन भेष बनावत ॥ 'परमानँद' प्रभु बालक लीला सब गुपाल जनावत ॥ ३ ॥ १४ ॥ 卐 ॥ बने श्री माधो जू के महल ॥ ज्येष्ठ मास अति हि जरांत है मास माघ के कहल ॥ १ ॥ दूर ही तें ऐसें दिखियतु हैं

वादर केसे पहल ॥ बीच बीच हरत स्याम जू
जमुना केसें दहल ॥ २ ॥ श्रीपति कौं कहा कहवौ यह बात सब सहल ॥ 'परमानँद' दास तहां
करत फिरत हैं टहल ॥ ३ ॥ १५ ॥ 卐 ॥ चोताल
॥ ब्रिंदाबन कुंजन में मध्य खसखानौ रच्यौं
सीतल बियार झुक गोखन बहत है ॥ सुगंध
गुलाबी जल नाना बहु भाँतिन के ल लाय धाय
सखी सब छिरकति हैं ॥ १ ॥ धार धुरवा छूटति
तहां नीकें दादुर मोर पिक सुक जु फिरत हैं ॥
'कृष्ण दास' फुहारे छूटें मनमथ मन लूटें झुकि
झुकि झुकि धारें हौदन भरति हैं ॥ २ ॥ १६ ॥
॥ 卐 ॥ ब्रिंदाबन बैठे मग जोवत है बनवारी
सीत मंद अति सुगंध त्रिविध पवन चारी ॥ सुनि
सुनि री बंसीबट बंसी रट जमुना के तट निपट
निकट नट नागर बोलत हैं आली री ॥ १ ॥ पुहु-

पन की लता खचित कुसुमन की सैया रचित
कुंज भवन चलहु राधे बैठे गिरिधारी ॥ 'सूर
दास' मदन मोहन तलफत जैसें मीन चातक
चलौं बैगि दरस दीजै तु ही प्रान प्यारी ॥ २ ॥
॥ १७ ॥ 卐 ॥ महल उसीर दोऊ बैठे मौज में
होज में पांउ झुलावें हो ॥ गरे बैयां झुकि लेत
फुहारन मुख ढिंग मुखहि ढलावें हो ॥१॥ स्वेत
महीन उपरनान में छबि सोभित बार खुलावें ॥
'नागरी दास' नागर सखी चितवति इक टक पलक
झुलावें ॥ २ ॥ १८ ॥ 卐 ॥ चोताल ॥ यह कोउ
जानत री बाकी चितवनि में कैंधो चंद्रिका में
मुरली मांझ ठगोरी ॥ देखत सुनति सब मोहे
जात हें सुर नर मुनि ओर खगोरी ॥ १ ॥ हरत
काम की कामताई माई सों त्रिया संग लागि
रहति ढोरी ॥ जो कुल कान करों तो लाज आवे

ऊत जगन्नाथ कविराय के प्रभु सों लोक लगे तो
लगोरी ॥ २ ॥ १९ ॥ 卐 ॥ रची उसीर सदन
ता मधि बैठे हरि प्यारी परसपर सुगंध जल सौं
घोर अंग लगावत दोऊ ॥ तैसी बनि आई
सखी सब जल जंत्र फुहारे छुडावत मानौं मेघ बरषन लागे न्हानी बूंदन जोऊ ॥१॥ बनी बिचित्र
कुसुम माल पिय प्यारी कंठ धरत त्रिविध पवन
डोलत तहाँ उपमा और न कोऊ ॥ जमुना जल
झेलि रहयौं फूले कमल लाल सोभित 'ब्रजाधीस'
मुदित ग्रीषम केलि करत तहाँ दोऊ॥२॥२०॥卐॥
रुखडी मधुबन की निस दिन रहत खरी ॥ जब तैं
परस भयौ री हरि कौं निस दिन रहत हरी ॥१॥
सुंदर जल जमुना को सीतल प्रफुलित द्रुम लता
सगरी ॥ 'नँद दास' प्रभु की सरन आई जीवन
मुक्ति करी ॥ २ ॥ २१ ॥卐॥ लालन उसीर महल

मधि रावटी रची बनाय प्रेम सुखकारी ॥ गुलाबजल सौं सींचें सार खसखाने छूटति फुहार फुंहीं बरसत मानौं प्रेम पुंज न्यारी ॥ १ ॥ फूलन के हार भूषन अंग सोभा देति गजरा हार अरु उर राजत बेलि निवारी ॥ 'नँद दास' प्रभु पिय पीतम परस्पर रति रस केलि करत तन मन धन बलिहारी ॥ २ ॥ २२ ॥ 卐 ॥ वे दिखियतु गोकुल के रुख जू प्राची दिस तें नेक दछिन हे मेरी अंगुरी के अग्र करो नेक मुख जू ॥ १ ॥ गोबरधन सृंग चढि कहे मोहन चलीये दाउ जू हमे हे देखन की भुख जू जनम भूमि चलि आहे 'गोविंद' प्रभु तन पुलकित मन भयो अति सुख जू ॥ २ ॥ २३ ॥ 卐 ॥ सीतल कुंज पुहुप पुंज महा उसीर की रावटी टाटी छिरकति कुँमकुम मलयज देखत आवत कांपी ॥ बहुत कर

कपूर चूर सों सरस प्रेम पूर जमुना की लोल लहर बहुत वृक्ष चांपी ॥ १ ॥ केसर मृगमद गुलाब लै लै दल कोमल जाल तोकों रची सेज रसाल राखी हैं पीतांबर ढांपी ॥ तेरोई ध्यान धरत तेरोई नाम रटत ‘जगत’ को प्रभु आरत लेन पठई दिन मापी ॥ २ ॥ २४ ॥ 卐 ॥

चोताल ॥ सीतल खसखानौ अति ही सुहानौं मानों ॥ मानौं हेमंत ऋतु गेह रूप धरे आय ता मधि बैठें बालकृष्ण सारंग मधुरे धुनि बीन सरस राग रंग बरसानों ॥ १ ॥ छूटत फुहारे नाना बिधि हौद भरे भारे चादरन की धुनि चहूँ औरनों ॥ निरतत मोर कोकिला सोर दामिनि सी प्यारी घनस्याम संग रंग भरी सावन सौं सुख सरसानों ॥ २ ॥ २५ ॥ 卐 ॥

सुंदर तिवारौ खसखाने कौ बनायों है बैठें ब्रजराज कुंवर मन

कों हरत हैं ॥ अति सुगंध जल बहु भाँतिन के बेला भरि लाय लाय सखी सब छिरक्यौ करत हैं ॥ १ ॥ सीतल सुगंध बिबिध समीर वहैं कोकिला चकोर मोर डोलति फिरति हैं ॥ जीवन फुहारे छूटे मनमथ मन लूंटे ऊकि ऊकि धारे होदन भरत हैं ॥ २ ॥ २६ ॥ 卐 ॥ सूर आयो सीस पर छाया आई पायन तर पंछी सब ऊकि रहे देखि छायां गहरी ॥ ब्रज के लोग सुकुमार जुरि जुरि के किंवार उपबन की ब्बार तामें पौढे पिय प्यारी ॥ १ ॥ धंधीजन धंध छांडि बैठ रहे छिप छिप पसु पक्षी जीव जंतु चुप रही चिरियां ॥ 'सूर' अलबेलि चालि धसि डरात कहा माघ की मधिरात जैसी ज्येष्ठ की दुपहरियां ॥ २ ॥ २७ ॥ 卐 ॥ सौंघे भींनो ऊगा ऊीनो छूटे गात लटकि रहे स्याम अंगन सौं॥ कटि धोवती

बनी अब छबि सौं ठाढे री लाल त्रिभंगन सौं
॥१॥ पीत पाग पर मोरन की चंद्रिका कुसुमन के
गुच्छा फबति रंगन सौं ॥ बनमाल सोहे मालती
मन मोहै गोबरधनेस चपल दगन भौंह भृंगन सौं
॥ २ ॥ २८ ॥ 卐 ॥ सोभित लाल परघनी झीनी
॥ ता पें इक अधिक छबि उपजत जलसुत पाँति
बनी कटि छीनी ॥१॥ उज्ज्वल पाग बनी सिर
राजति अलकावली मधुप मधु पीनी ॥ 'चतुरभुज
दास' लाल गिरिधर पिय चपल नैंन जुवतिन
बस कीनी ॥ २ ॥ २९ ॥ 卐 ॥ सोहत कटि
आडबंध अति नीको ॥ खासा कों फेंटा सिर
सोहत लाल बन्यों नंदजी को ॥ १ ॥ मोतिन
माल बिराजत उर पर लीये कमल कर ही को॥
'कुंभन दास' प्रभु गोबरधनधरलाल भाँमतो
जीयको॥२॥३०॥卐॥ सोहत रंग भरे दोऊ उसीर

महछ में छूटत फुहारन गुलाब नीर ॥ बरुनी
अलक भुव बूंद मानौं अलक सरद कमल उपर
ओस कन जेसें दोउ जन अंग लपटे हे चीर
॥ १ ॥ गावत जहाँ दंपति बजावत बिसाखा
बीन ठाढी है प्रवीन सखी सभा सुरत हिर ॥
'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर छबि निरखति सावन
सौं ऊर लायौं रस कुंज पुंज पुंज धीर समीर ॥२॥
॥ ३१ ॥ 卐 ॥ परदनी ॥ सोहत स्याम मनोहर
गात ॥ स्वेत परदनी अति रस भींनी केसर
पगीया माथ ॥ १ ॥ करन फूल प्रतिबिंब कपोलन
अंग अंग मनमथ ही लजात ॥ 'परमानंद' दास
को ठाकुर निरखि वदन मुसिकात ॥ २॥ ३२॥卐
ताल झुमरो ॥ उपरेना स्याम तमाल को ॥ तोधौं
कहा लहयो बृज सुंदर ललित त्रिभंगी लाल को
॥ १ ॥ सुभग कलेबर प्रगट दिखियतु हाथन सो

कुं. क़न जाल को ॥ तु रस मग्न भई नहि समुझत बाल केलि ब्रज ब्याल को ॥ २ ॥ निस दिन रहत गोप ग्वालन संग चंचल नैंन बिसाल को ॥ ३ ॥ .... चालको ॥ ४ ॥ ३३ ॥ 卐 ॥

मुकुट ॥ कुंज ॥ चोताल ॥ कुंज भवन तें निकसे राधा माधो लेय चलि जल में लवांह ॥ ज्यों ज्यों प्यारी अलसाय पग धरत मंद मंद त्यों त्यों स्त्रम कन वदन निहारत करत मुकुट की छांह ॥ १ ॥ स्त्रमित जान पीत पट छोरि पवन ढुरावत तातें घेरो होत ब्रज वधू मांह ॥ 'जगन्नाथ कविराय' के प्रभु को मुख सुख सुहाग बस देखि डहरि डाह ॥ २ ॥ ३४ ॥ 卐 ॥ खसखाना ॥ फेंटा ॥ आडबंध ॥ कोन लइ क्यों न कहो इँढूरियां

गुपाल मेरी ग्वाल बोलत खन मांझ तुम ही
हँसत हो ॥ गहि पत तुम सुधे रहो कोन लई
कहा सों कहो देख्यो कोन लेत सखी कहाँ तुम
बसत हो ॥ १ ॥ दई हे दुराय धरत घोस मेन
चोर परत हँसो जाँहि एसी होय काहेपे रसत हो
॥ 'कृष्ण दास' बसत बास ब्रज में गिरिराज
आस टेढो फेंटा आडबंध कोन पें खसत हो ॥२॥
३५ ॥ 卐 ॥ दूफेरी झनक भई तामें आये पीय
मेरे, में उठि कीनो आदर॥ आंको भरि लई, गई
तन की तपति सब ठोर ठोर मुद चनक ॥ १ ॥
रोम रोम सुख संतोष भयो गयो अनंग तजि तें
न रहयों तनक ॥ मोहि मिल्यों अब चतुर 'घोंधी'
को प्रभु मिटि गई अब बिरह की खनक ॥ २ ॥
३६॥卐॥ बिलावल झूमरो ॥ देख्यो री हरि नंगम
नंगा॥जल सुत भूषन अंग बिराजत बस नहिं न छबि

ऊठति तरंगा ॥१॥ कहा कहो अंग अंग की सोभा
निरखति लजत कोटि अनंगा ॥ कछु दधि हाथ
कछु मुख माखन 'सूर' हँसत ब्रज जुवतिन संगा
॥ २ ॥३७॥ 卐 ॥ झुमरो ॥ सखी री दुल्हे देख्यों
प्रात ॥ छबिलों सेहरो सीस मनोहर छबिले नैंन
जंभात ॥ १ ॥ छबिले बसन सकल अंग सोहत
कहि न सकत कछु बात ॥ सखी बचन सुनि
'राम दास' प्रभु निरखि बलि बलि जात ॥ २ ॥
३८ ॥ 卐 ॥ पनघट ॥ सारंग ॥ चोताल ॥ पनीया
न जेहो री आली नंद नंदन मेरी मटुकी झटकि
के पटकी ॥ ठीक दुफेरी में अटकी कुंजन में कोऊ
नं जाने मेरे घट की ॥१॥ कहा री करों कछु बस नही
मेरो नागर नट सौं अटकी ॥ 'नंद दास' प्रभु की
छबि निरखति सुधि न रही पनघट की ॥२॥३९॥
॥ 卐 ॥ तिताल ॥ पीत पिछोरी काहा जो

बिसारी ॥ ये तो लाल ढिंगन की ओरे हे काऊ की सारी ॥ १ ॥ हों वा घाट पियावत गैया जहाँ भरत पनिहारी ॥ भीर भई गैया सब बिडरी मुरली भली जों संवारी ॥ २ ॥ हों ले भज्यो ओर काहु की व्हे ले गई जो हमारी ॥ 'परमानँद' बलि बलि बतियन पर तृन तोरत महतारी ॥३॥४०॥卐

॥ उदे फेंटा ॥ इमन ॥ ताल.... ॥ फव्यों उदे फेंटा गोरे भाल पर बेंदी लाल ॥ सोनें के सूत बने कलंगी केसों झुके हे दाहिनी ओर जलक स्याम पर करत अहाल ॥ १ ॥ सुवन बनी नष फिरि फेरत पान खात मुसिकात बाल ॥ दरपन लखि रिझवारि रसिक पीय गोरस भरे वल्लभ 'रसिक' रसाल ॥ २ ॥ ४१ ॥ 卐 ॥

कल्यान ॥ चोताल ॥ अरे कोन टेव तिहारी रे कन्हैया जब जब मारग रोके ॥ पनीया भरन केसे जाय व्रज वधू आडो

क. ई ठाढो रहत लकुट लिये दृग झोकें ॥ १ ॥ गागर ढार देत पाछे तें तारी बजावत जेसे कहु चोकें ॥ रसिक प्रीतम की अटपटी लटपटी चली ये जात एसी कोन गिने री माई समझ न परे वांकी तोकें ॥ २ ॥ ४२ ॥ 卐 ॥ हमीर ॥ झुमरो ॥ कटि पीत पिछोरा ओढे ठाढो री खिरक मुख भुज तर कंचन लकुट बरे ॥ अलक बेलि एठवा फेंटा बांध्यो री रचि छेल छबिलो बनमाला लहे लहेत गरे ॥ १ ॥ अंग अंग प्रतिमा घुंघुरि बिलोकनि कोटिक मनमथ पाय परे ॥ बात कहेत हित अनुप सखा सों हँसि हँसि दसनन फूल झरे ॥ २ ॥ ४३ ॥ 卐 ॥ एँठवा फेंटा ॥ हमीर ॥ आड चोताल ॥ सीस एँठवा फेंटा कांधे दो वरसेली ठाढे फिरत करत गोसेलई ॥ कटि तट पीतांबर बांध्यों कसि पोछत गायन पीठ मुरि हँसि डारत डेली ॥ १ ॥

भई न सकुच ताहि चहाई सकुचावत ही तो संग
संग संग खेलि खेली ॥ 'धोंधी' के प्रभु मांगि लई
कर कर तें दोहनी नैंन दुरत मुसिकानें तव हरि
भुज पेली ॥ २ ॥ ४४ ॥卐॥ उष्णकाल ॥ झूमरो ॥
सोंधे न्हाय बेठी पहिरि पट भूपन तहाँ फूलवारी
तहाँ सूकावत अलकें ॥ करनख सौं ले केस संवारत
मानौं नव घन में उडगन झलकें ॥ १ ॥
विविध सिंगार लीए ठाढी हे पीय सखी मानौं हो
डर भयो दल जू मदन के॥ 'हरिदास' के प्रभु कु
वारि कहु यों निरखति पल न लगत कहुं नैंनन नीकें
पलकें॥२॥४५॥卐॥ मान ॥ केदारो ॥ आजु कऊं हु
कुंजन भेट भई ॥ दरसन देत ठणोरी, व्है गई
स्याम मई ॥ को उसीर को चमर ढुरावत ज्यों
ज्यों जात तई व्है अचेत धुकि परत धरनि पर
सखीयन उठाय लई ॥ २ ॥ तिन में इक जू सपी

सयांनी सो ले तहाँ गई ॥ लेऊ ‘सूर’ प्रभु व्याधि
अपनी तुम बिषे बेलि वई ॥ ३ ॥ ४६ ॥ 卐 ॥
सुनत तिहारी बात मनोहर चोंप चले दोऊ नैंन ॥
जेसैंही तेसैंही बाढी परी धारानि धुनि एन ॥ १ ॥
कोऊ उसीर कोऊ कमल कुँमकुमा कोऊ धाई जल
लैंन ॥ कीए अनेक उपचारन लागत डसी कठिन
यहे मैंन ॥ २ ॥ तिनमें इक जु सषी सयानी
अनबोली कर सैंन ॥ सूर स्याम राधिका बुलावों
बिरह भयो जीय लेन ॥ ३ ॥ ४७ ॥ 卐 ॥ बिहाग ॥
हरि बोलत चल गोकुल नारी तोहि मनावत
अधिक रात गई आवत जात सखी हों हारी को
जानें जुवतिन के मन की मेन लखी होय अँधियारी ॥ ‘कृष्ण दास’ प्रभु गिरिधर नागर पग
नुपूर धुनि उपर बारी ॥ २ ॥ ४८ ॥ 卐 ॥
पोढायवे के ॥ बिहाग ॥ पोढिए प्यारे गिरिधरनराय

नवल नागरी कुंवरि राधिका सूहथ सेज राखी बिछाय ॥ १ ॥ नाना फूल सुगंध बहुत रचि सौंधे वर बीरी बनाय ॥ साजि सिंगार सकल मृग नैंनी अंग अंग गुन बहु भाय ॥ अदभुत रीत देखि मनमोहन आतुर व्है पग धरयों धाय ॥ 'चतुरभुज दास' प्रभु रसिक मुकुट मनि मिले रसिकनि भेटि उर लाय ॥२॥४९॥卐॥ यह सुनि पिया पैं आई ॥ उठि धाई अकुलाय अंक भरि मानौं रंक निधि पाई ॥ १ ॥ मिलि पौढे संकेत कुंज में नव कुसुमन सेज बनाई ॥ 'परमानँद' दास को ठ़ाकुर विविधि केलि कीनी मन भाई ॥ २ ॥ ॥ ५० ॥ 卐 ॥ परिसिष्ट ॥ चंदन ॥ आलापचारी ॥ साखी ॥ घसि चंदन मलयागीरी बोहोत अरगजा सानं ॥ चरचित आर्चित सांवरो अक्षै तीज सुख मान ॥ १ ॥ चंदन बागो फवि रहयों पगियां

रंग सुढार ॥ अरु उपरेना केसरी राजत लाल इजार ॥२॥१०४॥卐॥ पनघट॥टिपारो ॥ सारंग॥ चोताल॥ जमुना जल भरन गई, देखत जीये सकुच रही पनघट पर देख्यों नंद दुलारो ॥ सुंदर स्याम तन सुदेस नटवर वपु तरन वेस मल्ल काछ पीत बसन कनक बरन टिपारो ॥ १ ॥ चंदन की खोरु अरगजा अंग अंग फव्यो लकुट लीए करन कमल लागति अति प्यारो ॥ 'कृष्ण दास' सुख की रासि गोपीजन बसत हीये त्रिविध ताप दुर होत बानिक जो निहारो।२।१०५卐।समै सैन॥सन्मुख॥ बिहाग ॥ चोताल ॥ बैठे व्रजराज कुंवर प्यारी संग जमुना तीर सीतल ब्यार सखी मंद मंद आवें ॥ अति उदार वेजंती स्याम अंग सोभा देति अंस भुजा मेल दोऊ बिहँस बिहँस गावें ॥ १ ॥ ऊीनो पट दिपत देह प्रीतम सौं अति सनेह गौर स्याम

अभिराम सोभा कहति न बनि आवें ॥ 'सूर दास' मदनमोहन मोहनी सें बने दोऊ हँसि हँसि अंग अंग अरगजा लगावे ॥२॥१०६॥卐॥ परिसिष्ट ॥नरसिंह चतुर दसी के पद पत्रा १०८ तें ११७ सू बोलनों ॥ क्रम ॥ समै ॥ मान ॥ राग बिहाग ॥ताल आड चोताल ॥ डगर चल गोबरधनकी वाट ॥ खेलत बीच मिलेंगे मोहन जहाँ गोधन के ठाट ॥ १ ॥ चलरी सखी तोहि जाय मिलाउं, सुंदर वदन सरोज ॥ कमल नैंन के इक रोम पर बारों कोटि मनोज ॥ २ ॥ पाहुनी इक अनुपम आई आन गामकी ग्वार ॥ 'परमानँद' स्वामी के ऊपर सरवसु डारों वार ॥३॥१७॥卐॥ माहात्म्य ॥ राग सारंग ॥ ताल झूमरो ॥ जो रस रसीक कीर मुनि गायो ॥ सो रस रटत रहत निस बासर सेस सहस्त्र मुख पार न पायो ॥ १ ॥ सिव ब्रह्मा नारद

मुनि मधुकर निगमनि अगम अगाध बतायो ॥ जद्यपि रमा रहत चरन तर कमलन को रस उन न चखायो ॥ २ ॥ तरनि तनया तट निकट बंसी बट ब्रिंदावन की बिथनि बहायो॥ सो रस रसिक दास 'परमानँद' ले राधे उर बिच छिपायो ॥ ३ ॥१॥卐॥ समै मंगला ॥ गंगा दसमी के पद ॥ राग बिभास ॥ चोताल ॥ आगे आगे भाज्यौं जात भगीरथ को रथ पाछैं पाछैं आवत रंग भरी गंग ॥ झलमलात अति उज्ज्वल जल जोति अब निरखति मानौं सीस भरि मोतिन मंग॥ १ ॥ जँहा परे हैं भूप कब के भस्म रूप ठौर ठौर जागि उठे होति सलिल सँग ॥ 'नंद दास' मानौं अग्नि के जंत्र छूटे ऐसे सुर पुर चले धरे दिव्य अंग ॥ २ ॥ १ ॥卐॥ बिलावल ॥ तिताल या झुमरो ॥ श्री गंगा तै त्रिभुवन जस छायो ॥

सगर वंस तारन के कारन भगीरथ लै आयो ॥ १ ॥ जटा संकरी मात जान्हवी परसत पाप नसायो ॥ महा मलीन पापी अपराधी सौं वैकुंठ पठायो ॥ २ ॥ जै जै कार करत सुर नर मुनि भागि अपुने आयो ॥ 'कृष्ण दास' सुर सुरी महातम बेद पुरानन गायो ॥३॥२॥ 卐 ॥ गंगा पतितन कौ सुख देनी ॥ सेवा कर भगीरथ लाए पाप काटन को छेनी ॥ १ ॥ सकल ब्रह्मांड फोर के आवत चलत चाल गज गेनी ॥ 'परमानँद' प्रभु चरन परस तें भई कमल दल नैंनी ॥२॥३॥ समै राजभोग आये में ॥ छाक बीरी कें ॥ दरसन मैं अरि जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत पत्रा (११०) सूं बोलनों ॥ समै भोग ॥ सारंग ॥ धमार ॥ बैठे घनस्यांम सुंदर खेवत हैं नाव ॥ आज सखी नंदलाल के संग खेलवे को दाव ॥ १ ॥ पथिक तुम

खेवट हम दीजिए उतराई ॥ नाव धार माऊ रोकीं इत उत ढुरकाई ॥ २ ॥ जमुना गंभीर नीर अति तरंग लोलें ॥ गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मृदु बोलें ॥ ३ ॥ नंद नँदन डरपति हैं राखियें पद पास ॥ याही मिस मिल्यों चाहे 'परमानँद दास' ॥ ४ ॥ ४ ॥ 卐 ॥ समै ॥ आरती में ॥ कान्हरो ॥ चोताल ॥ कृपा रस नैंन कमल दल फूलें ॥ भ्रू विलास देखें कोटिक मनमथ रहे भूलें ॥ १ ॥ वदन कमल पर कुटिल अलक छबि मोतिन हार अवतंस झूलें ॥ 'गोविद' प्रभु प्यारी संग बैठे जहाँ कालिंदी कूले॥ ॥ २ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ समैं ॥ सेन ॥ राग ॥ बिहाग ॥ झुमरो ॥ सुंदर जमुना तीर री मन मोहन ठाढे ॥ जब ते दृष्टि परे नंद नंदन तब तें रहति न धीर री ॥ १ ॥ मृगमद तिलक अ-

लक घुघरा री नासा मुक्ता कीर री ॥ 'सूर दास' प्रभु बैनु बजायो थाक्यो सरिता नीर री ॥ २ ॥

॥ ६० ॥ 卐 ॥ मान ॥ अष्टपदी ॥ केदारो ॥

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहर वेशम्॥ न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥ १ ॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने बनमाली ॥ गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ॥ ध्रु० ॥ नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम॥ बहु मनुतेऽतनु ते तनुसंगतपवनचलितमपि रेणुम् ॥ धीर० ॥ २ ॥ पतति पतत्र विचलति पत्रे शंकितभवदुपयानम् ॥ रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥ ॥ धीर० ॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलम् ॥ चल सखि कुंज सतिमिरपुंज शीलय नीलनिचोलम् ॥ धीर० ॥४॥ उरसि

मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके ॥ तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ॥ धीर०॥ ॥ ५ ॥ विगलितवसनं परिहृतरसनं घटय जघनमपिधानम् ॥ किशलयशयने पंकजनयने निधिमिव हर्षनिदानम् ॥ धीर० ॥ ६ ॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ॥ कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥धीर०॥ ७ ॥ श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ॥ प्रमुदितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ॥ धीर० ॥ ८ ॥१॥ 卐 ॥

समै ॥ मान ॥ केदारो ॥ आगे चल प्यारी री जहाँ सघन नवल निकुंज भारे ॥ कर सौं अंचल कराषि कहत सुजान सुंदर प्यारे ॥ १ ॥ निकट सरिता समीर सीतल री जहाँ कोकिला कलरव मोर करत अपारे ॥ बांह जोटी रस मत्त मद गज

चलत अति छबि "गोविंद" बलि बलि हारे॥२॥ ॥ ८ ॥ 卐 ॥ पोढायवे के ॥ बिहाग ॥ नवल किसोर नवल नागरीआं ॥ अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर स्यांम भुजा अपनें उर धरीयां ॥ १ ॥ करत बिहार तरनि तनया तट स्यामां स्याम उमगि रस भरीयां ॥ रही लपटाय प्रान प्यारे सौं मरकत मनि कंचन जेसें जरीया ॥ २ ॥ या उपमा कों रवि ससि नांही कंदर्प कोटि बारनें करीयां ॥ 'सूर दास' बलि बलि जोरी पर नंद नँदन वृषभानु दुलरीया ॥ ३ ॥ ९ ॥ 卐 ॥ इति क्रम ॥ बिलावल ॥ झूमरो ॥ गंगा जगत तारन कौं आई ॥ भगीरथ तपस्या कीनी सिव जो लै सीस चढाई ॥ १ ॥ पापी दुष्ट अजामिल गनिका पतित परम गति पाई ॥ परम पुनीत प्रीत ब्रह्मादिक बेद ब्यास मिलि गाई ॥ २ ॥ नाम लेति

तुव ध्यान धरत हैं तारति बार न लाई ॥ विप्र 'गदाधर' भारद्वाज कुल केवल गंगा सहाई ॥३॥ ॥ १० ॥ 卐 ॥ बिभास ॥ चोताल ॥ गंगा तीन लोक उद्धारक ॥ ब्रह्म कमंडल तें तुम निकसी सकल विस्व की तारक ॥ १ ॥ दरसन परसन पान किए तें तुम कीने जीव कृतारथ ॥ 'परमानँद' स्वामी के संगम आपुन भइ सुखारथ ॥ ॥ २ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ गंगा पावन नीर बहत ॥ तार लेति पातकी यों कहत नित प्रति हरि के चरन रहत ॥ १ ॥ सकल सिद्धि जमुना के संगम कहेत सबन कौं दीनता सहित॥ 'रसिक' करत तुम सौं बिनती मोहे दीजे दरस जातें हरि पद चहत ॥ २ ॥ १२ ॥ 卐 ॥ बिलावल ॥ चोताल ॥ जय जय श्री जमुना आनंद कंदिनी ॥ दरस परस त्रिविध ताप जात दुख निकंदिनी ॥ १ ॥

अंग अंग छबि तरंग सोभा सिंधुनी ॥ ताही के अघ कुठार जाकें बंदिनी ॥ २ ॥ अक्षय आनंद गोविंद अगम गामिनी ॥ 'हरिदास'. तट निवास जन्म जन्मनी ॥ ३ ॥ १३ ॥ 卐 ॥ जय जय श्री सूरजा कलिन्द नँदनी ॥ गुल्मलता तरु सुवास कुंज कुसुम मोद मत्त गुंजत अलि सुभग पुलिन वायु मंदिनी ॥ १ ॥ हरि समान धरम सील कान्त मंजुल जलद नील कटी नितंब भेदत नित गति उतंगनी ॥ सिकता जनुं मुक्ताफल कंकन जुत भुज तरंग कमलन उपहार लेत पिया चरन वंदिनी ॥ २ ॥ श्री गोपेन्द्र गोपी संगम स्रम जल कन सिक्त अंग अति तरंग निरखि रस सुफंदिनी ॥ 'छीतस्वामी' गिरिवरधर नंद नँदन आनंद कंद जमुने जन दुरित हरन दुख निकंदिनी ॥ ३ ॥ १४ ॥ 卐 ॥ राग बिभास ॥ चोताल

॥ जे जन गंगा गंगा कहे ॥ जन्म जन्म के
कोटिक दुष्कृत छिन ही मांऊ दहे ॥ १ ॥ स्नान
करन तें मन वांछित फल ततक्षन सरब लहे ॥
'व्रजपति' की प्यारी संगम तें बहु सुख देन
चहे ॥ २ ॥ १५ ॥ 卐 ॥ राग बिलावल ॥ ताल
झुमरो ॥ जे जन गंगा गंगा रटे ॥ पातक कोटिक
जनम जनम के ततक्षन मांऊ कटे ॥ १ ॥ मंजन
किये होत तन निरमल आवागमन मिटे ॥
'परमानँद' जल पान कीये तें बसे श्री जमुना
तटे ॥ २ ॥ १६ ॥ 卐 ॥ बिभास ॥ ताल........ ॥
जय भगीरथ नंदनी मुनि चय चकोर चंदनी
नर नाग विबुध वंदनी जय जन्हु बालिका ॥
विष्नुपद सरोज जासी ईस सीस पर विभासि
त्रिपथ गाथ पुण्य पाथ पाप छालिका ॥ १ ॥
विमल विपुल वहसि वारि सीतल त्रै ताप हारि

भवंर बर बिभंग तरन रंग मालिका ॥ निज जन
पूजोपहार सोभित शशि धवल धार भंजन भव
भार भक्त कल्प थालिका ॥ २ ॥ निज तट वासी
विहंग जलचर थिर पसु पतंग कीट जटित ताप
शशिर सरस पालिका ॥ 'तुलसी' तव तीर सुमिरत
रघुबंस बीर विचरति मति मेहे गेह महिष
कालिका ॥ ३ ॥ १७ ॥ 卐 ॥ बिलावल ॥ झुमरो ॥
परमेश्वरी देव मुनि वंदन पावन देवी गंगे ॥ पावन
चरन कमल नख रंजित सीतल बाहु तरंगे
॥ १ ॥ मंज्जन पान करत जे प्रानी त्रिविध ताप
दुख भंगे ॥ तीरथ राज प्रयाग प्रकट भयो जब
जमुना त्रिबेनी सँगे ॥ २ ॥ भगीरथ कुल सगरो
तारन वालमीक जसु गायों ॥ तुव प्रताप हरिभक्ति
प्रेम रस जन 'परमानँद' पायों ॥ ३ ॥ १८ ॥ 卐 ॥
अष्टपदी ॥ बिलावल ॥ ताल....... ॥ नमो देवी

२१८ गंगा दसमी, अष्टपदी बिलावल, चरचारि. न.

गंगे नमो मात गंगे हर सीरसी निखिल मघ मलकनंदे ॥ ध्रु० ॥ मधु मथन मूर्तिवर बिंदु कर कामकं बहसि बहुवार सतरंगे ॥ हरिचरण नख भीधुर गजदंत निर्गता ब्रह्म जल कृत पात्र संगे ॥ नमो देवी गंगे ॥ १ ॥ त्वमसि जलपावनी चतुरुदधिगामिनी सप्त ऋषि सुकृत कुल साले ॥ कनक गिरिलंबिता सकल मुनिवंदिता हर मुकुट सित कुसुम माले ॥ नमो देवी गंगे ॥ २॥ पावयति नागरं पूरयति सागरं संगता विदुर्गिरि पादे ॥ तीर्थवर कारिणी स्वर्ग जो उधारिणी हेम शैल पाषाण भेदे ॥ नमो देवी गंगे ॥ ३ ॥ इह निखिल सुरगणै रिह निखिल मुनीजनै रिह निखिल वेद समुचारे ॥ सुयश गीयसे पीयसे जहनु मणीकर्णिके देवी संसार सारे ॥ नमो देवी गंगे ॥ ४ ॥ गलुष जल मीष्टतं सत मेघतो फलं तव

कर मकर गंभीरतोये ॥ तट निकट सिंधुरसी परलोक बंधुरसी सुरसदन साधनोपाये ॥ नमो देवी गंगे ॥ ५ ॥ कृत सलील नीरधुता पुलीन मुपकुर्विता तव नाम निर्मला लापे ॥ नीरयति बाधके निर्वाणपद साधके भक्तजन दहती संतापे ॥ नमो देवी गंगे ॥ ६ ॥ सगर सुत संगमे लसदमर सुंदरी दुती के दुष्कृत दुरापे ॥ सेविता चिन्तितता तर्पितावगाहिता मर्जिता मम हरसि पापे ॥ नमो देवी गंगे ॥ ७ ॥ इति राम लक्ष्मणौ कौशीको नुज्ञया सुर सुरीत कृत नमस्कारे ॥ वदति मतिसागरे धीर जयदेव कविस्तारयसि भव जलधि पारे ॥ नमो देवी गंगे ॥ ८ ॥ १९ ॥ 卐 ॥

अथ छाक अरु नाव के पद ॥ राग सारंग ॥ ताल झुमरो ॥ गोपी कोन की छकहारी कहा तुमारो नाम ॥ आज बोहनी तुम पें करी है भयो तुमारो

२२० छाक अरु नाव के पद, सारंग, झुमरो. गो.
काम ॥ १ ॥ प्रथम नाव तुम ही पें लायो गई
वीत जुग जाम ॥ कछुक लेहो मिलहे फिर देहें
सब सुख सुंदर स्याम ॥ २ ॥ नाम चंद्रावली
गोप गोधन घर रीठोडा मेरो गाम ॥ 'छीत-
स्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल कहा कोन सो
धाम ॥ ३ ॥ १ ॥ 卐 ॥ गोपी नीपट सयानी
लाइ छाक भली बीरियां ॥ भूख लागी अब ही
देखत री चढि कदम की डरीयाँ ॥ १ ॥ बैठी
पार आइ हों कब की आई नाव यह घरीयां ॥
दीजे बांट छाक घर घर की जब झारी भर
धरीयां ॥ २ ॥ ग्वाल सखा सब कहत स्याम सों
जेवो पायन परीयां ॥ 'छीत स्वामी' गिरिध-
रन श्री विठल बहुत निहोर करीयां ॥३॥२॥卐॥
ठाढी गोपी पार पुकारत मल्हा नाव किन लावो
॥ कान्ह कुँवर छाक आइ ले बेगि कृपा कर

आवो ॥ १ ॥ जेष्ठ मास मध्यान भयो हैं लागी
भुख बुझावो ॥ बडी वार टेरत भई तुम कों काहे
को अबेर लगावो ॥२॥ कहा देहो उतराई हम कों
व्हे अति सतर बुलावो ॥ 'छीत स्वामी' गिरि
धरन श्री विठल प्रभु पें सब कछु पावो ॥ ३ ॥
॥ ३ ॥ 卐 ॥ श्री जमुना पुलीन की लोनन बाढी
जेमन कों लाइ हरि छाक ॥ आइ आज सीदोसी
घर तें बैठन कों पायो इक ढाक ॥ १ ॥ ताकी
छांय गाम में बैठी तब कोऊ ग्वालन मारी हांक
॥ बोलो मल्हा नाव किन लावो स्रवन सुन्यों जब
एसो वाक ॥ २ ॥ आतुर व्है जमुना तट आई
देखत तुम इक टक रहे ताक ॥ 'कुंभन दास”
प्रभु गोबरधनधर लेहो सँवार अपनो पाक ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ 卐 ॥ नाव के पद ॥ राग सारंग. ॥ ताल
धमार ॥ चंदन पहिर (आइ के बदल) नाव हरि

बैठें कालिंदी के कुल ॥ पत्रा (१४३-४४) सूं अरु चंदन पहिर नाव हरि बैठें संग वृषभानु दुलारी हो ॥ पत्रा १४५ सूं बोलनों ॥ ताल झुमरो ॥ नीकी नाव आज बनाई ॥ जेठ मास परम सुखदायक तिथी सुमंगलदाई ॥ १ ॥ देव सुतार गढी कर अपुने मनि कल धोत जडाई ॥ मुक्ता लर घन घोर घंटिका पीत धजा फहराई ॥ २ ॥ नोतन उसीर मल्लिका चंपक दाम छवाई ॥ गादी तकिया स्वेत बिछोना फटे बाज सुर काई ॥ ३ ॥ भरि भाजन लिये चंदन केसर दियो है निसान बजाई ॥ खेलन लागी रसिक रंगिली जुवतिन बहोत चलाई ॥ ४ ॥ कोऊ बजावत ताल पखावज वीना कंध चढाई॥ कोऊ स्यामा पग घूंघरु बांधे रति रंग बेलि बढाई ॥ ५ ॥ कोऊ ढोलक मुर चंग बजावत

गानन पिक नल जाई ॥ देत बीरी मोहन राधे
को सोंधे अंग लगाई ॥ ६ ॥ सची सरसवती सुख
देखन आई जमुना फूल भराई ॥ दोऊ तट भीर
भई ब्रजजन की देख अतुल ठकुराई ॥ ७ ॥
छोटी छोटी नावन क्रीडत गोपी लीला ललित
मुख गाई ॥ 'परमानँद' परम धन पायो श्री
राधा लाल कन्हाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ 卐 ॥ चोताल ॥
ब्रिंदाबन जमुना के जल खेवत नाव ललितादिक
जहँ कुंज कुसुम रचत बैठें हरि राधा ॥ प्रफुलित
मुख दोऊ बने अरगजा रँग सारी पाग मोती
भूषन सुभग अंग तैसी है रूप अगाधा ॥ १ ॥
बार बार तट हरे द्रुम गजवर कमनीय केलि मृदु
सुगंध फैल रहयौ तरनि तेज न बाधा ॥ जंत्रन
जल फुंहीं परत सुखदायक सखी जहाँ ॥
'ब्रजाधीस' मधुरी तान गावत सुर साधा ॥ २ ॥

॥ ८ ॥ 卐 ॥ ‘बैठे घनस्याम सुंदर खेवत हे नाव’ पत्रा २०९ सूं बोलनो ॥ राग कान्हरो ॥ चोताल ॥ नदीया नदीया तीर नाव चलाई रे राधा नगर गोकुल तें कान्हा ने सुद्ध पाई अरे ॥ इक तो व्याकुल बाल कुल किनारे इक तो फिरत बन तें उपवन देति दिखाई अरे ॥ १ ॥ इक बन ढुंढ सकल बन ढुढयों कहां गए जादोंराई अरे ॥ एक ‘तान सेन’ को प्रभु अति ही अचगरो तोहि नंद दुहाई अरे॥२॥१०॥卐॥ परिसिष्ट॥ चंदन॥ सारंग॥चोताल॥ तपत ऐसी धुप जू कहां चले कुंजन तें ॥ पलकन बगर बुहारी स्वच्छ करी करोंगी टहल तेरी तन तें ॥ १ ॥ चंदन घीसि के लेप करोंगी फूलन सेज बिछाऊंगी मन तें ॥ ‘रामदास’ प्रभू रीझे ग्वालिन दीनी सेन नैंनन तें ॥ २ ॥ १०७ ॥ 卐 ॥ इक

पलक मूंदौ जब हरि मूरति आंखन में जब
खोलौं तब ठाढी आगें ॥ यह गति जिय औरे भई
है सखी री निस बासर सोवत जागें ॥ १ ॥ ढीट
भयौ गिरिधारी प्यारौ रहत हैं नैनन लागें ॥
'चतुर' बिहारी पिय काम मूरति रोम रोम
रस पागे ॥ २ ॥ ५१ ॥ 卐 ॥ ताल झुमरो ॥ यह
पट पीत कहाँ ते पायौ ॥ इतनिक प्रीति मदन
मोहन की तैं राधा जाय लोक सुनायौ ॥ १ ॥
ना वाकौ माल नाहि वाकौ गाहक नाहिन मोहन
घर उपजायौ ॥ इक दिना खेलत ब्रिंदाबन बहुत
जतन कर मोहि उढायौ ॥ २ ॥ सुमिरन भजन
बसत उर अंतर भाहि बिध कर लालन समझायौ ॥
प्रीति की रीति चतुर सोई जाने 'परमानँद' प्रभु
यौं बौरायौ ॥ ३ ॥ ५२ ॥ 卐 ॥ हमीर ॥ तिताल ॥
लगो जिन काहू की काहु सों अखीयां ॥ अब ही

जाय मिले क्यों न सजनी जो हुति तन पखियाँ ॥ १ ॥ हों जमुना जल भरन जात ही संग हुती सब सखीयाँ ॥ प्रभु 'कल्यान' गिरिधर के दरस बिनु हिबे परी धुक धुकियाँ ॥ २ ॥ ५३ ॥

॥ 卐 ॥ स्याम अंग सोभित हैं सखी तनीयां ॥ पाग दुपेची सीस बिराजत लर लटकत लटकनियां ॥ १ ॥ धेन चराय सखन संग आवत मात जसोदा लेति है कनीयां ॥ 'परमानँद' दास को ठाकुर श्री राधा मन मनीयां ॥ २ ॥५४॥卐॥

समैं सिंगार ॥ ज्येष्ठ सुक्ला १४ ॥ टोडी ॥ झुमरो ॥ जमुना जल घट भरि चली चंद्रावलि नारी ॥ मारग में खेलत मिले घनस्याम मुरारी ॥ १ ॥ नैंन सों नैंन मिले मन रहयो लुभाय ॥ मोहन मूरति मन बसी पग धरयो न जाय ॥२॥ तव की प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेट ॥ 'परमानँद'

ऐसी मिली जेसें गुड कुं चेट ॥ ३ ॥ १ ॥ 卐 ॥
सारंग ॥ ताल .... ॥ आवत हि जमुना भर
पानी ॥ स्याम रुप काहु को ढोटा वाकी चितवन
मेरी गेल भुलानी ॥ १ ॥ मोहन कहयो तुम कों
या व्रज हमें नाहि पहिचानी ॥ ठगीसी रही
चेटक सों लाग्यो तब व्याकुल मुख फुरत न बानी
॥ २ ॥ जा दिन तें चितये री मोतन ता दिन ते
हरि हाथ बिकानी ॥ 'नंद दास' प्रभु यों मन
मिलियो जों सागर में पानी ॥ ३ ॥ २ ॥ 卐 ॥
अधिवासन की बिरीयां ॥ अरु सेन खुले में ॥
अडानो ॥ चोताल ॥ जल कों गइरी सुघट नेह
भरि लाई परि है चटपटी दरस की ॥ इत मोहन
गांस उत गुरु जन त्रास चित्र पुतरी ज्यों ठाढी
नाम धरत सखी परस की ॥ १ ॥ टूटे हार फाटे
चीर नैंनन बहत नीर पनघट भई भीर सुद्धि न

कलस की ॥ 'नंद दास' प्रभु सौं ऐसी प्रीत बाढी गाढी फैलि परी सौरभ सरस की ॥२॥ ३ ॥卐॥

स्नानयात्रा ॥ मंगला के दरसन में पखावज झांझ बजे ॥ तिलक ॥ टोडी चोताल ॥ करत गुपाल जमुना जल क्रीडा ॥ सुर नर असुर थकित भये देखत विसरि गई तन मन जीय पीडा ॥ १ ॥ मृगमद तिलक मलय कुँमकुमा केसरि अगर कपूर वास बहु भुरकन ॥ कुच जुग मगन गगन नंद नँदन कोमल पान परसपर छिरकन॥ ॥ २ ॥ निरमल सरद कला कृत सोभित बरषत स्वाति बूंद जल मोती ॥ 'परमानँद' कंचन तन गोपी मरकत मनि गोविंद मुख जोती ॥१॥१॥卐

ज्येष्ठाभिषेक ॥ श्री हरिः ॥ श्रीकृष्णाय नमः श्री गोपीजनवल्लभाय नमः॥ हरिः ॐ तच्छंयोरावृणीमहे । गातुंयज्ञाय । गातुंयज्ञ पतये । दैवीस्वस्ति-

रस्तुनः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वंजिगातुभेषजम् शन्नोअस्तुद्विपदे । शंचतुष्पदे । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ३ ॥ सुवर्णंघर्मंपरिवेदवेनम् । इंद्रस्यात्मानंदशधाचरंतम् । अंतःसमुद्रेमनसाचरंतम्। ब्रह्मान्वविंदद्दशहोतारमर्णे । अंतःप्रविष्टशास्ताजनानाम् एकःसन्बहुधाविचारः । शत ꣳ शुक्राणियत्रैकंभवंति ॥ सर्वेवेदायत्रैकंभवंति ॥ सर्वे होतारोयत्रैकंभवंति ॥ समानसीनआत्माजनानाम् ॥ १ ॥ अंतःप्रविष्टः शास्ताजनाना ꣳ सर्वात्मा ॥ सर्वाःप्रजायत्रैकंभवंति ॥ चतुर्होतारोयत्रसंपदं गच्छंतिदेवैः ॥ समानसीनआत्माजनानाम् ॥ ब्रह्मेंद्र मग्निंजगतःप्रतिष्ठाम् ॥ दिवआत्मान ꣳ सवितारंबृहस्पतिम् ॥ चतुर्होतारंप्रदिशोनुक्लृप्तं ॥ वाचोवीर्यंतपसान्वविंदत् ॥ अंतः प्रविष्टंकर्त्तारमेतम् । त्वष्टार ꣳ रूपाणिविकुर्वंतंविपश्चिम् २ अमृतस्य-

प्राणंयज्ञमेतम् । चतुर्होतृणामात्मानंकवयोनिचिक्युः । अंतः प्रविष्टकर्त्तारमेतम् । देवानांबंधुनिहितं गुहासु । अमृतेनक्लृप्तंयज्ञमेतम् । चतुर्होतृणामात्मानं कवयोनिचिक्युः । शतंनियुतः परिवेदविश्वाविश्ववारः । विश्वमिदंवृणाति । इंद्रस्यात्मानिहितः पंचहोता । अमृतंदेवानामायुः प्रजानाम् ॥ ३ ॥ इंद्रᳫँराजानᳫँ सविता रस्मेतम् । वायोरात्मानंकवयोनिचिक्युः । रश्मिᳫँरश्मीनांमध्येतपंतम् । ऋतस्यपदेकवयोनिपांति । य आंड कोशे भुवनंबिभर्ति । अनिर्भिण्णः सन्नथलोकान्विचष्टे । यस्यांडकोशᳫँशुष्ममाहुः प्राणमुल्बम् । तेनक्लृप्तोमृतेनाहमस्मि । सुवर्णकोशᳫँ रजसापरीवृतम् । देवानांवसुधानींविराजम् ॥ ४ ॥ अमृतस्यपूर्णांतामुकलांविचक्षते । पादᳫँषड्ढोतुर्नकिलाविवित्से । येनर्त्तवःपंचधोतक्लृप्ताः उतवाषड्धाम-

नसोतक्लृप्ताः । तꣳषड्ढोतारमृतुभिःकल्पमानम् । ऋतस्यपदेकवयोनिपांति। अंतःप्रविष्टंकर्त्तारमेतम्। अंतश्चंद्रमसिमनसाचरंतम् । सहैवसंतंनविजानंतिदेवाः । इंद्रस्यात्मानꣳशतधाचरंतम् ॥ ५ ॥ इन्द्रो राजाजगतोयईशे । सप्तहोतासप्तधाविक्लृप्तः । परेणतं तुंपरिषिच्यमानम् । अंतरादित्येमनसाचरंतम् । देवानाꣳ हृदयंब्रह्मान्वविंदत् । ब्रह्मैतद ब्रम्हणउज्जभार । अर्क्कꣳश्चोतंतꣳसरिरस्यमध्ये । आयस्मिन्सप्तपेरवः । मेहंति बहुलाꣳ श्रियम् । बह्वश्वामिंद्रगोमतीम् ॥ ६ ॥ अच्युतां बहुलाꣳ श्रियम् । सहरिर्वसुवित्तमः । पेरुरिंद्रायपिन्वते । बह्वश्वामिन्द्रगोमतीम् । अच्युतांबहुला ꣳ श्रियम् । मह्यमिन्द्रोनियच्छतु । शतꣳ शताअस्ययुक्ताहरीणाम् । अर्वाङायातुवसुभीरश्मिरिन्द्रः । प्रमꣳहमाणोबहुलाꣳ श्रियम् । रश्मिरिंद्रः सवितामेनिय-

तच्छतु ॥ ७ ॥ घृतंतेजोमधुमदिंद्रियम् । मय्ययमग्निर्दधातु । हरिःपतंगः पटरीसुपर्णः । दिविक्षयोनभसायएति । सनइंद्रःकामवरंददातु । पंचारं चक्रंपरिवर्त्तते पृथु । हिरण्यज्योतिस्सरिरस्यमध्ये । अजस्रंज्योतिर्नभसासर्पदेति ॥ सनइंद्रःकामवरंददातु । सप्तयुंजंतिरथकेकचक्रम् ॥ ८ ॥ एकोअश्वोवहतिसप्तनामा । त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वम् येनेमाविश्वाभुवनानितस्थुः भद्रंपश्यंतउपसेदुरग्रे॥ तपोदीक्षामृषयःसुवर्विदः ॥ ततः क्षत्रंबलमोजश्च जातम् ॥ तदस्मैदेवाअभिसन्नमंतु ॥ श्वेतꣳरश्मिंबोभुज्यमानम् ॥ अपांनेतारंभुवनस्यगोपाम् ॥ इंद्रंनिचिक्युःपरमेव्योमन् ॥ ९ ॥ रोहिणीः पिंगलाएकरूपाः ॥ क्षरंतीः पिंगलाएकरूपाः ॥ शतꣳ सहस्राणिप्रयुतानिनाव्यानाम् ॥ अयंयः ॥ श्वेतोरश्मिः॥ परिसर्वामिदंजगत् ॥ प्रजांपशून्धनानि ॥

अस्माकंददातु ॥ श्वेतोरश्मिः परिसवँबभूव ॥ सुवन्मह्यंपशून्विश्वरूपान् ॥ पतंगमक्तमसुरस्यमायया ॥ १० ॥ हृदापश्यंतिमनसामनीषिणः समुद्रेअंतःकवयोविचक्षते ॥ मरीचीनांपदमिच्छंति वेधसः पतंगोवाचंमनसाबिभर्ति ॥ तांगंधर्वोवदद्गर्भेअंतःतांद्योतमाना ँस्वर्यँमनीषाम् ॥ ऋतस्यपदेकवयोनिपांति ॥ येग्राम्याःपशवोविश्वरूपाः ॥ विरूपाःसंतोबहुधैकरूपाः ॥ अग्निस्ता ँ अग्रेप्रमुमोक्तुदेवः ॥ ११ ॥ प्रजापतिः प्रजयासंविदानः वीत ँस्तुकेस्तुके ॥ युवमस्मासुनियच्छतम् ॥ प्रप्र यज्ञपतिंतिर ॥ येग्राम्याः पशवोविश्वरूपाः ॥ विरूपाः संतोबहुधैकरूपाः ॥ तेषा ँसप्तानामिहरन्तिरस्तु ॥ रायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ॥ यआरण्याःपशवोविश्वरूपाः ॥ विरूपाः संतोबहुधैकरूपा ॥ १२ ॥ वायुस्ता ँ अग्रोप्रमुमोक्तुदेवः ॥

प्रजापतिः प्रजयासंविदानः ॥ इडायैसृप्तंघृतव
च्चराचरम् ॥ देवान्वविंदन्गुहाहितम् ॥ य
आरण्याःपशवोविश्वरूपाः ॥ विरूपाःसंतोबहुधैक
रूपाःतेषा ꣳ सप्तानामिहरंतिरस्तु ॥ रायस्पोषाय
सुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ॥१३॥ सहस्रशीर्षापुरुषः॥
सहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमिंविश्वतोवृत्वा ॥ अत्य
तिष्ठद्दशांगुलम् ॥ पुरुषएवेद ꣳ सर्वम् ॥ यद्भूतंयच्च
भव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानः ॥ यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्यमहिमा ॥ अतोज्याया ꣳ श्चपूरुषः ॥१॥
पादोस्यविश्वाभूतानि ॥ त्रिपादस्यामृतंदिवि ॥
त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः ॥ पादोस्येहाभवात्पुनः ॥
ततोविष्वङ्व्यक्रामत् ॥ साशनानशनेअभि ॥ त
स्माद्विराडजायत ॥ विराजोअधिपूरुषः ॥ सजा
तोअत्यरिच्यत ॥ पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ २ ॥
यत्पुरुषेणहविषा ॥ देवायज्ञमतन्वत ॥ वसन्तो

अस्यासीदाज्यम् ॥ ग्रीष्मइध्मःशरद्धविः ॥ सप्ता
स्यासन्परिधयः ॥ त्रिःसप्तसमिधःकृताः ॥ देवाय
द्यज्ञंतन्वानाः॥अबध्नन्पुरुषंपशून् ॥ तंयज्ञंबर्हिषि
प्रौक्षन् ॥ पुरुषंजातमग्रतः ॥ ३ ॥ तेनदेवाअयजन्त॥
साध्याऋषयश्चये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ संभृतं
पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यान् ॥ आर
ण्यान्ग्राम्याश्चये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ॥ ऋचः
सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दाँसिजज्ञिरेतस्मात् ॥ य
जुस्तस्मादजायत ॥ ४ ॥ तस्मादश्वाअजायंत ॥
येकेचोभयादतःगावोहजज्ञिरेतस्मात् ॥ तस्माज्जा
ताअजावयः ॥ यत्पुरुषंव्यदधुः ॥ कतिधाव्यकल्प
यन् ॥ मुखंकिमस्यकौबाहू ॥ कावूरूपादावुच्येते॥
ब्राह्मणोस्यमुखमासीत् ॥ बाहूराजन्यःकृतः ॥ ५ ॥
ऊरूतदस्ययद्वैश्यः ॥ पद्भ्याँशूद्रोअजायत ॥
चन्द्रमामनसोजातः ॥ चक्षोःसूर्योअजायतमुखा

दिंद्रश्चाग्निश्च ॥ प्राणाद्वायुरजायत ॥ नाभ्याआसीदन्तरिक्षम् शीर्ष्णोंद्यौःसमवर्त्तत ॥ पद्भ्यांभूमिर्दिशःश्रोत्रात् ॥ तथालोकाँऽअकल्पयन् ॥ ६ ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तम् ॥ आदित्यवर्णंतमसस्तुपारे ॥ सर्वाणिरूणिविचित्यधीरः ॥ नामानिकृत्वाभिवदन्यदास्ते ॥ धातापुरस्ताद्यमुदाजहार ॥ शक्रःप्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः ॥ तमेवंविद्वानमृतइह भवति ॥ नान्यःपंथाअयनायविद्यते ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवाः ॥ तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकंमहिमानःसचंते ॥ यत्रपूर्वेसाध्याःसंतिदेवाः ॥ ७ ॥ अद्भ्यःसंभूतःपृथिव्यैरसाच्च ॥ विश्वकर्मणः समवर्तताधि ॥ तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमेति ॥ तत्पुरुषस्यविश्वमाजानमग्रे ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहांतम् ॥ आदित्यवर्णंतमसः परस्तात् ॥ तमेवंविद्वानमृतइहभवति ॥ नान्यः पंथाविद्यतेयनाय ॥ प्रजा-

पतिश्चरतिगर्भेअंतः॥ अजायमानोबहुधाविजायते ॥ १ ॥ तस्यधीराः परिजानंतियोनिम्मरीचीनांपदमिच्छंतिवेधसः ॥ योदेवेभ्यआतपति ॥ योदेवानांपुरोहितः ॥ पूर्वोयोदेवेभ्योजातः ॥ नमोरुचायब्राह्मये ॥ रुचंब्राह्मंजनयंतः ॥ देवाअग्रेतदब्रुवन् ॥ यस्त्वैवंब्राह्मणोविद्यात् ॥ तस्यदेवाअसन्वशे ॥ ह्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यौ ॥ अहो रात्रेपार्श्वे ॥ नक्षत्राणिरूपम् ॥ अश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्टंमनिषाण ॥ अमुंमनिषाण ॥ सर्वंमनिषाण२ हरिःओ३म् तच्छंयोरावृणीमहे ॥ गातुंयज्ञाय ॥ गातुंयज्ञपतये ॥ दैवीस्वस्तिरस्तुनः ॥ स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वंजिगातुभेषजम्शन्नोअस्तुद्विपदे॥ शंचतुष्पदे॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ अमृताभिषेकोस्तु.

॥ इति शुभम् ॥ सिंगार ॥ अष्टपदी ॥ रामकली ॥ चरचारि ॥ नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हर

कृष्णमिलनांतरायम् ॥ निजनाथमार्गदायिनि कुमारिकामपूरिकें कुरु भक्तिरायम् ॥ १ ॥ध्रु० ॥ मधुपकुलकलित कमलावलीव्यपदेशधारितश्रीकृष्णयुतभक्तहृदये ॥ सततमतिशयितहरिभावनाजाततत्सारूप्यगदितहृदये ॥ १ ॥ निजकूलभवविविध तरुकुसुमयुतनीरशोभया विलसदलिवृंदे ॥ स्मारयसि गोपीवृंद पूजितसरसमीशवपुरानंदकंदे ॥ २ ॥ उपरि बलदमलकमलारुणद्युतिरेणुपरिमिलितजलभरेणामुना ॥ व्रजयुवतिकुचकुंभकुंकुमारुणमुरः स्मारयसि मारपितुरधुना ॥ ३ ॥ अधिरजनि हरिविहृतिमीक्षितुं कुवलयाभिधसुभगनयनान्युशति तनुषे ॥ नयनयुगमल्पमिति बहुतराणि च तानि रसिकतानिधितया कुरुषे ॥ ४ ॥ रजनिजागरजनितरागरंजितनयनपंकजैरहनि हरिमीक्षसे ॥ मकरंदभरमिषेणानंदपूरिता सततमिह हर्षाश्रु

मुंचसे ॥ ५ ॥ तटगतानेकशुकसारिकामुनिगण-
स्तुतविविधगुणसीधुसागरे ॥ संगता सततमिह
भक्तजनतापहृति राजसे रासरससागरे ॥ ६ ॥
रतिभरश्रमजलोदितकमल परिमलव्रजयुवतिमोदे
॥ ताटंकचलनसुनिरस्त संगीतयुतमदमुदितमधु-
पकृतविनोदे ॥ ७ ॥ निजव्रजजनावनात्तगोवर्द्धने
राधिकाहृदयकमले॥रतिमतिशयितरसविठ्ठलस्यासु
कुरु वेणुनिनदाह्वानसरले ॥ ८॥ व्रजपरिवृढवल्लभे
कदा त्वच्चरणसरोरुहमीक्षणास्पदं मे ॥ तव
तटगतवालुकाः कदाहं सकलनिजांगगता मुदा
करिष्ये ॥ ९ ॥ वृंदावने चारुबृहद्वने मन्मनोरथं
पूरय सूरसूते ॥ दृग्गोचरः कृष्णविहार एव
स्थितिस्तवदीये तट एव भूयात् ॥ १० ॥ ३ ॥卐॥
बिलावल ॥ ताल धमार ॥ मंगल जेष्ट जेष्टा
पून्यो करत स्नान गोबरधनधारी ॥ दधि ओर

२४० स्ना. या. समै राजभोग, सारंग, चोताल. मो.

दूब मधु ले सखी री केसर घट जल डारत प्यारी ॥ १ ॥ चोवा चंदन मृगमद सौरभ सरस सुगंध कपुरन न्यारी ॥ अरगजा अंग अंग प्रति लेपन कालिंदी मधि केलि बिहारी ॥ २ ॥ सखीयन जूथ जूथ मिलि छिरकत गावत तान तरंगन भारी ॥ केसो किसोर सकल सुखदाता श्री वल्लभ नंदन की बलिहारी ॥ ३ ॥ ४ ॥卐॥ अरु जमुनाजी के॥ राजभोग आए छाक बीरी के॥ राजभोग ॥ दरसन में ॥ राग सारंग ॥ आड चोताल ॥ मोहि मिलन भावै बलबीर की ॥ सरद निसा पूरन ससि उदयौ खेलन जमुना तीर की ॥ १ ॥ हरि हम कौं हम हरि कौं छिरकैं पैंसद फेलन नीर की ॥ हँस कर खैंच लेत औंडे जल अँक माल भुज भीर की ॥ २ ॥ जल तें निकस होत जब ठाढे निरखि अंगोछनि चीर की ॥ 'परमानँद' स्वामी

रति नागर बलि बलि स्याम सरीर की ॥३॥५॥卐 भोग में ॥ सारंग ॥ धमार ॥ जमुना जल गिरिधर करत बिहार ॥ आसपास जुवति मिलि छिरकतिं हँसी कमल मुख चारु ॥१॥ काहु की कंचुकी बंद छूटै काहू के टूटे हार ॥ काहू के बसन पलटि मनमोहन काहू के अंग न संभार ॥ ॥२॥ काहू की खुभी काहू की नकवेसरि काहू के बिथुरे बार ॥ 'सूर दास' प्रभु कहा लों बरनो लीला अगम अपार ॥३॥६॥卐॥ सेन में ॥ केदारो ॥ चौताल ॥ चारु नट भेख धरि बैठे गोविंद जहाँ सघन गहवर नव निकुंज भवने ॥ नागरी जब ही नागर सूं नैंना मिले तब हि नागरी मूदित बिपुन गवने ॥ १ ॥ रसिक वर नंद सुत सोहत सिज्या रची विविध गति विविध पट फूल ठवने ॥ हंसजा तट निकट विमल जल बहेत तहाँ

त्रिविध तल सैल सीषंड पवने ॥२॥ 'दासकुंभन' प्रभु सुजान तोहि मिलन कुं बहुत आतुरनिमेष जुग बीतवने ॥ जोवत पथ इकटक लाल सुकुमार सखी गोबरधनधर अखिल जुवती रवने ॥ ३ ॥ ७ ॥卐॥ अष्टपदी ॥ रति. पत्रा २११अरु मान में॥आगे चल प्यारी री पत्रा २१२सूं बोलनो ॥ पोढायवे के ॥ बिहाग॥ दोऊ मिलि करत भावती बतियां ॥ गिरिधरलाल कुंवरी राधे के नखमनि अंक लिखित उर छतीयां ॥ १ ॥ तेसी ये छिटक रही उजियारी पून्यों चंद सरद की रतियाँ ॥ केलि रुप निज जमुना 'श्रीभट' ब्रिंदाबन फूल्यों बहु भतियाँ॥२॥१०॥卐॥इति ॥ बिलावल॥ ताल झूमरो ॥ क्रीडत कालिंदी जल मांही ॥ नव सत साज सिंगार किये तहां श्री राधा गरे बाहीं ॥ १ ॥ आसपास सोभित ब्रज बनिता

मधि राधा नंदलाल ॥ जल सीकर डारत चहूँ दिस तें निरखि मुदित गुपाल ॥ २ ॥ आनंद मगन भए सब खेलत करत कुलाहल भारी ॥ 'गोविंद' प्रभु पिय की यह लीला निरखि हरखि बलिहारी ॥ ३ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ राग बिलावल ॥ ताल धमार ॥ पूरन मासी पूरन तिथी श्री गिरिधर स्नान करत मन भायो ॥ अति आनंद सों नह्वावत श्रीविट्ठल जिहि बिधि बेद बतायो ॥ १ ॥ उत्तम जेष्ठ जेष्ठा नक्षत्र कर अभीसेक भक्तन मन भायो ॥ 'परमानँद दास' को ठाकूर अति आनंद दरसायो ॥ २ ॥ १२ ॥ 卐 ॥ सारंग ॥ ताल झुमरो ॥ गोविंद छिरकत छींट अनूप ॥ इत बृषभानु नँदिनी सोहत उत घनस्याम स्वरुप ॥ १ ॥ पावन जल जमुना कौ निरमल करत विविध विधि केलि ॥ सजल सुमन सोभित

अंगन में उडत तरंगन रेलि ॥ २ ॥ कीनें सब
गोबरधनधारी वेद सृंखला पेलि ॥ 'गोविंद' प्रभु
आनंदसिंधु में रहे मगन मन झेलि ॥३॥ ११॥卐॥
जमुना जल क्रीडत नंद नँदन ॥ गोपी वृंद
मनोहर चहूँ दिस माधि अरिष्ट निकंदन ॥ १ ॥
छिरकति पान परसपर सोभित सिथिल होति
भूज चंदन ॥ जनु जुवति पूजति अहि पति कौं
लग्यों अंग पें वंदन ॥ कुटिल सुकचि सुदेस अंबु-
कन चूँबत अग्र अति मंदन ॥ जनु गंडूक कवल
रस मुख भरि डारत अलि आनंदन ॥ दूरि भरि
अंक अगाधि चलत लै जनु लुब्धक खग फंदन ॥
'सूर स्याम' श्रीपति के गुन कों गावत हैं श्रुति
छंदन ॥ ४ ॥१४॥卐॥ बिलावल ॥ ताल झुमरो ॥
यमुना देवी कोन भलाई ॥ नाम रुप गुन लहरि
जू को न्यारी अपनी चाल चलाई ॥ १ ॥ उजर

देस कीयो भ्राता को तुम परसत उत कोउ न जाई ॥ जे तन तज तेर तट तात तरुन पर गेल चलाई ॥ २ ॥ मुग्ध वधूं कु करे दूतपनो अधम नरु कों आनि मिलाई ॥ आपुन स्याम आन उजल करी तात तपति निज सीतलताई ॥ ३ ॥ जल कों छल करी अनल अधम कुं पहे सुनि कें कोऊ न पत्याई ॥ यद्यपि पछिपात पतितन को तदपी 'गदाधर' पीय मन भाई ॥४॥

१५ ॥ 卐 ॥ राग बिभास ॥ ताल चोताल ॥ जे जे श्री सूरजा कलिंद नँदिनी ॥ गुल्म लता तरु सुकादि कुंज कुसुम मोद मत्त मधुप गुंज पुलिन सोरभ पवन मंदिनी ॥ १ ॥ हरि समान धर्मसील काँति सजल जलदि नील तट नितंब भेटत पद गति अमंदनी ॥ सिकता मनौं मुक्ताफल कंकन जुत भुज तरंग कमलन उपहार लै पिय चरन

वंदनी ॥ २ ॥ गोप वृंद गोपी संग स्रम जलकन सिकरन अंग रति रंगिनी सुरसिक रस सुफंदिनी ॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधरन धन धन आनंद कंद जमुने जन दुरित हरित मोह निकंदिनी ॥ ३ ॥ १६ ॥ 卐 ॥ रामकली ॥ ताल चरचारि॥नमो देवि जमुने मन बचन कर्म करुं सरन तेरी ॥ सकल सुख कारनी भव सिधु तारनी दरसने कटत है कर्म बेरी॥ १ ॥अभै पद दायिनी भक्त मन दायिनी करि कृपा पूरिये साध मेरी ॥ दीजिये भक्ति पद लाल गिरिधरन की काटिये बिषै 'कृष्ण दास' केरी ॥ २ ॥ १७ ॥卐॥ सारंग ॥ झुमरो ॥ राधा छिरकति छींट छबीली ॥ उच कुच कंचुकी जूथ छूटे बंद लटकि रही लटगीली ॥ १ ॥ बदन चंद्र ताटंक कनकमय रतन जटित मनिनीली ॥ गति गयंद मृग राजत कटि पर सोहति किंकिनी

ढीली ॥ २ ॥ मच्यो खेल जमुनाजल अंतर प्रेम मुदित रस झीली ॥ नंद सुवन भुज ग्रीव विराजत मांग सुहाग भरीली ॥ ३ ॥ बरषत सुमन देव मुनि अरु दुदुंभि सद्द रसीली ॥ 'सूर स्याम' सुंदर रस क्रीडत जमुना तरंग थकीली॥ ॥ ४ ॥ १८ ॥ 卐 ॥ हमीर ॥ आड चोताल ॥ अबला तेरे बलहिन ओर ॥ बीधे मदन गुपाल महागज कुटिल कपाट नैंन की कोर ॥ १ ॥ जमुना तीर तमाल लता वन फिरत निरंकुस नंद किसोर ॥ भौंह विलास पास बस कीनैं मोहन अंग गहे तैं जोर ॥ २ ॥ ले राखे कुच बिच निरंतर शृंखल सुखद प्रेम की डोर ॥ यह उचित होइ व्रज सुंदरी 'परमानँद' चपल चित चोर ॥ ॥ ३ ॥ १९ ॥ 卐 ॥ रामकली चरचरि ॥ जयति श्री जमुने प्रकट कल्प लति के ॥ अष्ट विध सिद्धि

२४८ स्ना.या.जमुनाजी के, रामकली, चरचरि ज.

अद्भुत वैभव सकल स्वजन विख्यात स्वाधीन पति के ॥ १ ॥ केलि श्रम सुरत पय रुप ब्रज भूप कों पुत्र पयपान दे विश्व माता ॥ अंग नूतन करत पुष्टि तब अनुसरत त्रिदल रस केलि की अमित दाता ॥ २ ॥ रहत जम द्वार तें मुक्ति सुख चार तें नाम त्रय अक्षर उच्चार कीने ॥ उभय लीला विष्ट ब्रज प्रीय कुमारिका तुर्य प्रिया वदत रस रंग भीनें ॥ ३ ॥ अनावृत ब्रह्म तें सदा ब्रत व्है रहि कनक साखा विटप साम वल्ली ॥ सदा प्रफुल्लित 'द्वारकेस' अवलोक कें नित्य आनंद आभीर पल्ली ॥ ४ ॥ २० ॥ 卐॥

जमुनाजी के पद ॥ जयतिः भानु तनया चरन युगल वन्दे ॥ जयति ब्रजराज नंद प्रिये सर्वदा देति आनंद ज्यों सरद चंदे ॥ १ ॥ जयति सकल सुख कारिनी कृष्ण मन हारिनी श्री

गोकुल निकट बहत मंदे ॥ जाके तट निकट हरि रास मंडल रच्यो तहां नृत्यत ताता थेई छंदे ॥ ॥ २ ॥ जयति कलिन्द गिरि नँदनी देत आनंदिनी भक्त के हरत सब दुख द्वंदे ॥ चित्त में ध्यान धरि मुदित 'व्रजपति' कहे देति श्रीजमुने जयति नंद नंदे ॥ ३ ॥ २१ ॥ 卐 ॥ नमो तरनि तनया परम पुनीत जग पावनी कृष्ण मन भावनी रुचिर नामा ॥ सकल सुख दायिनी सब सिद्धि हेतु श्री राधिका रमन रति करन स्यामा ॥ १ ॥ विमल जल सुमन कानन मोदयुत पुलिन अति रम्य प्रिय व्रज किसोरा ॥ गोप गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित रहत जेसें चकोरा ॥ २ ॥ लहरि भाव ललित वालुका सुभग व्रज बाल व्रत पूरन रास फलदा ॥ ललित गिरिवर धरन प्रिय कलिन्द नँदिनी निकट 'कृष्णदास'

बिहरति प्रबलदा ॥ २ ॥ २२ ॥ 卐 ॥ समै सिंजा आरती ॥ हमीर ॥ आडचोताल ॥ मुग्धा तू कित करत विलंबु॥ जो लौं जाई, क्यों न घर अपने, भरि घट जमुना अंबु ॥ १ ॥ जो लौं नाहि करत हरि मुरली मोहन मंत्र अधर अवलंबु ॥ सुधि करि देखि तु ही 'ब्रजपति' जब बैठे विटप कदंबु॥ ॥२॥२३॥卐॥ सुहा बिलावल तिताल॥आजु सखी देखे स्याम नये री॥ निकसे आनि अचानक अब ही इत फिरि फिरि चितये री॥१॥ मैं तब तें पछिताति यहै तनु नैंनन बहुत भये री ॥ जो विधिना इतनी जानत हे कत दृग दोइ दये री ॥ २ ॥ सब दे लेऊं लाष लोचन कहूँ जो कोऊ करत नये री ॥ हरि प्रति अंग विलोकन कोन सुख के पठये री ॥ ३ ॥ अपनी चोंप बहुत कहाँ पैये हरि संग गये री॥ थके चरन सुनि 'सूर' मानौं गुन मदन

बान बिंधये री ॥ ४ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल तिताल
॥ आज हों अधिक हँसी री माई ॥ काम विवस
मों सौं रति बाढी अवलोकत समझाई ॥ १ ॥
रवि ससि काँति भई जू सखी री कांच भवन में
माई ॥ विस्मय भयो प्रतिबिंब बिंब सौं अंक भरे
जदुराई ॥ २ ॥ कर अंचल मुख मुंद रही हों
ठाढी ही इक ठांई ॥ 'सूर दास' प्रभु निश्चय
जानी तब ही उर लपटाई ॥ ३ ॥ २ ॥ 卐 ॥
झूमरो ॥ आये सुरत रंग रसमाते ॥ मानौं विश्राम
निमित पिय पाये श्रमित भरे हो ताते ॥ १ ॥
डगमगात मग धरत परत पग उठतम बेगि
तहाँ तें ॥ मानौं गज मत्त चरन चंकारि करि गहि
आनत तिहि ठां ते ॥ २ ॥ उर नख छत्त
कंकन छत्त पाछें सोभित है पहिराते ॥ मदन
सूभट के बान लाग मानौं निकसि गये इहि घातें

॥ ३ ॥ साँचे करत आपने बोलनि टरत न मरजादा तें ॥ 'सूर स्याम' कहि गये आई है पग धारे तिहि नाते ॥ ४ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ आवत बाबा नंद कों हाथी ॥ बाहु बिसाल कमल दल लोचन संकरषन कों साथी ॥ १ ॥ अपनी इच्छा रहत ब्रज भीतर गायन के संग खेले ॥ केसि तृणावर्त कों मारयों सकट पूतना पेले ॥ २ ॥ श्री वसुदेव देवकी नँदन कंस वंस कों काले॥ 'परमानँद' दास कों ठाकुर नायक नंद कों लाले ॥३॥४॥卐॥ झुमरो ॥ उपरना वाहि के जू रहयों ॥ जाहि के उर बसे स्याम घन निस कों जो सुख रहयों ॥ १ ॥ छबि तरंग अंग अंग दृग भेद न जात कहयों ॥ 'नंद दास' प्रभु चले सेन दे जब दावन दोर गहयों ॥ २ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ कहां लों अलकें देहो ओट ॥ चंचल चपल सुरंग छबीलो

आनि बन्यों मृग जोट ॥ १ ॥ खंजन कमल मीन अति लाजत उपमा दीजे कोट॥ 'सूर दास' प्रभु कहां लो बरनो नाहि न रुप की टोट ॥ २ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ किसोरी अंग अंग भेटी स्याम ही ॥ कृष्ण तमाल तरल भुज साखा लटकि मिलि जेसे दामि दाम हि ॥१॥ अरज इक लता गिरि उपजे सो दीने करुना माहि ॥ कछुक स्यामल गिरि की छायो कनक अगामही ॥ २॥ गिरिवरधरन सुरत रति नायक रति जीतें संग्राम हि ॥ 'सूर' कहे यह उभय सुभट बीच क्यों जू बसे रिपु काम ही ॥ २ ॥ ७ ॥ 卐 ॥ कोउ मेरे आंगन व्है जू गयो ॥ जगमग जोत वदन की सोभा सपनों सों जू भयो ॥ १ ॥ हों दधि मथन सुनि भोर ही सजनी लेन जू गई मथानी ॥ कमलनैंन की नांई चितवत यह मूरति में जानी ॥ २॥ विथकित भई

चरन गति याकी बहोत खेद में पायो ॥ 'परमानँद' प्रभु चरन सरन गति रहतो कित हे आयो ॥ ३ ॥ ८ ॥ 卐

चलो सखी सोतन के घर जैए ॥ मान घटे तो कहा घटे तेरो पीय के दरसन पैए ॥ १ ॥ इह जोबन अंजली को पानी समय गये पछितैए ॥ 'धोंधी' के प्रभु रस बस कर लीये तन की तपत बुजैए ॥ २ ॥ ९ ॥ 卐 ॥

जैये वा के धाम जाके जागे चारो जाम लाल ॥ मोसों अवध वदि वहीं रति मानी जानी उवटी है उर माल ॥ १ ॥ दिखियतु हे नख क्षत अंग अंग में अधर अंजन पीक गाल ॥ मदन मोहन पीय क्यों व दूरत हो लटकि रही जो पाग अर्धभाल ॥ २ ॥ १० ॥ 卐 ॥

जानति हों जेसे गुनन भरे ॥ काहे को दुराव करत हो बलि जांउ सोई व कहो काके जू ढरे ॥ १ ॥ निस के उनी दे नैंन अरुन्न दोऊ आलस बस सब अंग भरे ॥ चंदन तिलक

मिट्यौं काहू वंदन स्याम सुभग तन नख
उघरे ॥ २ ॥ अब तुम कुटिल किसोर नंद सुत
कोन कोन के मन जु हरे ॥ अब एते पर समऊ
'सूर' प्रभू सौंह करन कौं होत खरे ॥ ३ ॥ ११ ॥
卐 ॥ झुमक सारी हो तन गोरे ॥ १२ ॥ पत्रा
२६९ सू बोलनौं ॥卐॥ नागरि नागर करति बिहार
॥ काम नृपति सेना अंग दोऊ सोभा वार न पार
॥१॥ अधर अधर नैंन नैंन मधु जँभात कीयो इक
ठोर ॥ मानौं इंदी वर कमल कुसेसय चारु भँवर
रंग ओर ॥ २ ॥ वंदन भाल विन सम दोऊ अरस-
परस वर नारि ॥ मानौं विविध चंद चकोर परस
पर कमल अमल रवि धार ॥ ३ ॥ रति आगम
हित अति उपजायो पीय प्यारी मन एक ॥
'सूर दास' स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कला
अनेक ॥ ४ ॥ १३ ॥ 卐 ॥ नागर स्याम नागरि

नारि ॥ सुरति रति रनजीत दोऊ अंग मनमथ
धारि ॥ १ ॥ स्याम तनु घन नील मानो तडित
तनु सुकुमारि ॥ मानो मरकत कनक संजुत
खच्यो काम समार ॥ २ ॥ कोक गुन करि कुसल
स्यामा उत कुसल नंदलाल ॥ 'सूर स्याम' अनंग
नायक विबस कीनी बाल ॥ ३ ॥ १४ ॥ 卐 ॥
नाहिन दूरत नैंना रतनारे ॥ मानौं बंधुप कुसुम पर
सोभित सुंदर स्याम सिलीमुख तारे ॥१॥ कुटिल
अलक रही विथुरि वदन पर सकुच हित
हरि निरस निहारे ॥ भ्रौंह सिथिल मानौं मदन
धनुष गुन गरे कोकनद बान विसारे ॥ २ ॥ मूंदेई
आवत नैंन आलस रस बस छीन भये उघरत न
उघारे ॥ 'सूर दास' प्रभु सोई करो तुम
भामिनी जिहि रतिरन हारे ॥ ३ ॥ 卐 ॥ नैंन
उनींदे भए रंग राते ॥ मानौ हौं सुरंग सुमन

पर सजनी भँमर भ्रमत मदमाते ॥ १ ॥ प्रेम
पराग पांखुरी फल दल प्रफुलित मदन लता तें॥
सुभग सुवास बिसाल बिलोकन प्रकट प्रीति
कर ताते ॥२॥ तैसे ई मंद मारुत गज भाँवर मुदित खुलत छबि यातें ॥ सिंचे 'सूर स्याम' रस
नागर हीत कर केलि कला तें ॥ ३ ॥ १६ ॥卐॥
पिया मुख देखो स्याम निहार ॥ कहि न जाई
आनन कीयो सुधार ॥ मानौं सुधाकर दुगब
सिंधुतें काढयो कलंक पखार ॥ १ ॥ भाल लाल
सिंदुर बिंदु पर मृगमद की छबि न्यारि ॥ मानौं
बंदुक कुसुम उपर अलि, बेठो पंख पसारि ॥
मुकता मांग सीस पर राजत सोभित हारि ॥२॥
चंचल नैन चंहू दिसि चितवन जुग खंजत अनुहार ॥ मानौं परसपर करत लराई कीर वधाई
रार ॥ ३ ॥ वैसरि के मुकुता मैं झाई बरन

बिराजित चारि ॥ मानौं सुर गुरु सुक्र भौम सानि
चमकत चंद मझार ॥ ४ ॥ तरवन श्रवन रतनमनि
भूषित सिर सीमंत संवारि ॥ जनु जुग भान
दुहूँ दिस उगयो भयो दुधातहामरि ॥ ५ ॥
मंद हँसनि में दुसन दुरत हे दुति दामिनि
चमकारि ॥ चिबुक चिन्ह मनु दीयो विधाता
रुप सील निरवारि ॥ ६ ॥ तरवन सधर अधर
नकवेसर चिबुक चारु रुचिकारि ॥ कंठ सिरी
दुलरी तिलरी पर नहि उपमा कहूं चारि ॥ ७ ॥
तिहि बन दृष्टि परी मनमोहन लज्जित भई सुकुमारि
॥ लीनी उमगि उठाई अंक भरि 'सूर दास'
बलिहारि ॥८॥१७॥ 卐 ॥ बने हो रसमसे आए
प्रात॥ प्यारी नख पद रत्नावली रस रंजित नवरंग
गात ॥ १ ॥ मुख रेखा मोहन जुवतिन मन प्रमुदित
पुलकि जँभात ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर

चंचल जे तरवर के पात ॥२॥१८॥ 卐 ॥ बरस
उघर गयो मेहा टपकत पाँति द्रुम बेलि ॥ झमकत
झार नीर भरे बूंदन सोभा देख सहेली ॥ १ ॥ हौं
जू मनावत तूं नही मानत प्रकटी प्रीत नवेली ॥
'तानसेन' के प्रभु रस बस कर लीनें यातें तुम गर्व
गहेली ॥२॥१९॥卐॥ आडचोताल मद गजराज
की सी चाल॥ भुज वर दंड सूंड की सोभा हर लीनी
नंदलाल ॥१॥ चलत कच कुंचित अनेक अंकुस
से लटकत भाल ॥ चमर चारु अवतंस मंजरी
मद कन स्रम जल जाल ॥ २ ॥ धातु बिचित्र
चित्र तन सोभा गलगलदांबनमाल ॥ मोर
पंख फहेरात बात बस जनु ढरकत हैं ढाल॥ ३ ॥
हठ कुल धर्मढीह ढाहत है जे रदन कटाच्छ
बिसाल ॥ गंध अंध धावत अलि घेरे गुंजत मंजु
रसाल ॥ ४ ॥ घनन घनन घंटिका रुनत कटि

उपजत सब्द सुताल ॥ खनन खनन सृंखल सें
नुपूर बाजत लजत मराल ॥ ५ ॥ जुवति हृदय
सरस सरसी में जानौं खेले बहु काल ॥ मानौं
अंग अंग लपटाने उन के मनसी बाल॥६॥मुरली
रव गुंजार सुनत ही कंपत चित ब्रज बाल ॥ रस
रूस नों 'गदाधर' यों हि बन बेली बेहाल ॥
॥ ७ ॥ २० ॥ 卐 ॥ रति संग्राम वीर रस माते
॥ हो हरि सूर सिरोमनि अज हूं न संभारत तातें
॥ १ ॥ आनि ही बरन भये दोऊ लोचन आपुन
सहज बनातें ॥ मानौं भीर भई जोधन की भये
क्रोध अति राते ॥२॥ परिमल लुब्ध मधुप जहाँ
बैठत उडि न सकत तिंहिं ठां तें ॥ मानौं मदन
के हे सर फावे फोक वा राधा तें ॥ ३ ॥
बैठि जात अलसात उनी दे क्रम क्रम उठत तहाँ
ते॥मानहूं मूरछा कटाच्छ नाट सर कटि न

सकत हियरा तें ॥ ४ ॥ डगमगात घूमत मानौं
घाइल सोभा सूमर कला तें ॥ 'सूर दास' प्रभु
रति रन जीतें अब संकात धोका तें ॥ ५ ॥२१॥
॥ 卐 ॥ रस लम्पट भोगी भँवरा रे तोहि कहू न
अघाय ॥ निस दिन भ्रमित फिरत बन बेली
वासर तोहि सुखाय ॥ १ ॥ जो कोई मधुप तौ
अमल कमल मन को सुरताई ॥ जगन्नाथ कवि
राय के प्रभू सों मनमथ सौं अरुझाई ॥ २ ॥२२॥
॥ 卐 ॥ वायस तेरी सोने चौंच मढाऊं ॥ सगुन
बिचार प्रान प्यारे को तब तोहि बहुत रिझाऊं॥
॥ १ ॥ फरकत भुजा नैंन रतनारे किधौं गाय
सुनाऊं ॥ 'मुरारी दास' प्रभु भोर भये सपनो
सों भये जाग परे गुन गाऊं ॥ २ ॥ २३ ॥卐॥
तिताल ॥ जानी मैं आजु मिली प्यारे सौं अपनौं
भामतौं हरि कीनौं ॥ सकल रैनि रति रस

भरे खेलत पलकु पल न लागन दीनौं ॥ १ ॥
कंठ लगाईं भुज दे सिरहानें रसिक लाल कों
अधर रस पीयो ॥ 'कुंभन दास' प्रभु गिरिधर
पीय कों भर भेटिये दीयो हीयो ॥ २ ॥ २४ ॥
जैए वाके गेह जासों बढयों हे सनेह लाल ॥
अवधि वदि इहाँ, रात रहे तहाँ, एसे भये हो
बिहाल ॥ १ ॥ नख छत चिन्ह प्रकट दिखियतु
है दाग अधर मिस गाल ॥ 'रसिक' प्रीतम पीय
जानत हो जिय क्यों व दूरत वह चाल ॥ २ ॥
॥२५॥卐॥ जैए वाके महल जहाँ सों कीनी है रस
केलि ॥ वाही के तुम क्यों न सिधारो आवत
भूले गेल ॥ १ ॥ सिथिलित बसन अटपटे भूषन
केसें दूराबत छेल ॥ पीतांबर कटि सिथिल
'रसिक' पीय जानौं उरझी द्रुम बेलि ॥ २ ॥२६॥
॥ 卐 ॥ जैए वाही ठौर जहाँ के जागे नंद-

किसोर ॥ सांज कहि गए आवेंगे तेरे आए निपट उठि भोर ॥ १ ॥ लटपटी पाग अटपटे भूषन ओढे पीत पटोर ॥ पीक कपोल अधर मिस काजर अरुन भए दग डोर ॥ २ ॥ आधे बचन कहत तुतराते चितवत जाकी ओर ॥ ताहि पें जू सिधारीए प्यारे, 'रसिक' राय सिर मोर ॥ ॥ ३ ॥ २७ ॥ 卐 ॥ जपताल ॥ निरतत गुपाल संग व्रज अबला ॥ गिड गिडततता थेई कुरवत कला ॥ १ ॥ राजत मृदंग करताल तला ॥ जमुना पुलिन विकसित कमला ॥ २ ॥ सरद रजनि निस विमला ॥ 'गुपाल दास' यह अवसर भला ॥३॥२८॥ 卐 ॥ स्ना. परिसिष्ट ॥ ताल झुमरो ॥ विहरत जल जमुना रस भींने ॥ मानौ मत्त गज राज परसपर करीनी जुथ संग लीनैं ॥ १ ॥ तिन में वृषभानु दुलारी नील सुरंग पट झीनें ॥ राजत

रास रमन द्विज दंपति मोहित कर बस कीनें ॥ २ ॥ उभय वदन पर जल कनिक मानौं, जलज सरस छबि छीनें ॥ 'सूर' आरज हित अवलोकत मोहित सजनी प्रेम धन दीनें ॥ ३ ॥

॥ २४ ॥ बिलावल ॥ ताल झुमरो ॥ विहरत नारि हँसत नंद नँदन ॥ आंक में भरि भरि लेत आनंदन ॥ १ ॥ निरमल देह छूटत तन चंदन ॥ अति सोभा त्रिभुवन जन वंदन ॥ २ ॥ कंठन पीठि नारि अरु सोभा ॥ वे उनको वे उन को गोभा ॥ ३ ॥ वह अंक में भरि चलत अगाध हि ॥ अरसपरस मेटत से मन साध हि ॥ ४ ॥ कोऊ भजे कोऊ पाछें धावें ॥ जुवातिन सौं कहि ताहि मगावें ॥ ५ ॥ ताको गहि अथाह जल डारें ॥ सुख व्यास लता रूप निहारें ॥ ६ ॥ कंठ लगाय लेत पुनि तांही ॥ देत आलिंगन रीझि जाही ॥ ७ ॥

'सूर स्याम' व्रज जुवतीन भोगी ॥ जाकों धावत सिव मुनि जोगी ॥ ८ ॥ २५ ॥卐॥ ताल धमार ॥ लेख को ॥ जेठ मास पून्यों ऊजियारी करत स्नान श्री गोबरधनधारी ॥ सीतल जल घट हाटक भरि भरि रजनी अधिवासन सुखकारी ॥१॥ विविध सुगंध बहुत पोहो प ले तुलसी दल दै सरस सवारी ॥ कर ले संख न्हवावत प्रभु को श्री विट्ठल प्रभु की बलिहारी ॥२॥ तैसेइ निगम पढत द्विज आगै तेसीये गान करत व्रजनारी ॥ जै जै सब्द होत चहूँ दिस तें सुरपति करत कुसुम बरषा री ॥३॥ करि सिंगार परम रुचिकारी सीतल भोग धरयो भरि थारी ॥ दे बीरा आरति करत है ॥ 'गोविंद' तहाँ तन मन सब वारी ॥४॥२६॥卐॥ वर्षा ऋतु ॥ हमीर ॥ चोताल ॥ आली री बरखत घन टपकत बन भीजत बसन कंपत तन अति

सिराई ॥ गरजत घटा उन्हें आये नये बेलि आनि छाये तैसी भूमि हरियारी कोंधत चपला अति चपलाई ॥ १ ॥ तेसीये सांझ की स्यामताई द्रुमन की सघनताई मोरनकी कुहुकाइ झीगुरन की झिगुराई ॥ मेंन के प्रभु मन भाई आज को छबि देत दिखाई तब छतीयन धुक धुकाई हँसि हँसि कंठ लगाई ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ छबीले नीले घन की पूतरी क्रीडति ब्रिंदावन मांही ॥ विविध मुखन धरे बंसी करतल कर चलत देखत परछांही ॥ १ ॥ सब के हीयें करषत सोभा बूंदन वरषत गोपी लोचन चात्रक निरषित जिव हि ॥ 'नंद दास' कोऊ इक दामिनी सी ढिंग ठाढी ताकें गडवर दीयें ठाहीं ॥ २ ॥ २ ॥ 卐 ॥ तिताल ॥ देखि सखी री पवन पुरवैया ठोर ठोर रुखन को हलवो ॥ कारी पीरी घटा उमडि घुमडि आई ता मधि कृष्ण

स्यामा जू को चलवो ॥ १ ॥ कुंद लता द्रुम लता
सब फूली मंद कुसुम केसे कर खिलवो ॥ मीता
चलि अचल जल जमुना कों कबहूक तानसेंन
प्रभू सौं मिलिवो ॥ २ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ चोताल ॥
सघन बन बंक सरल तरल बेली बन छायो सांझ
भये वरसि गयो पावस ऋतु कोकिला रट ॥ जुही
बेली दल बेली की पातन और सांझ फूली कली
अली बने किरन नागर नट ॥ १ ॥ स्याम स्वेत
अरुन पीयरी घनि घनि घनि कंठ माल कोंधा
लागन चोंधा होत अद्भुत गत ॥ बलि बलि जैये
यहै ठोर जहाँ तानसेन मन तप लायो केवरो कद
मेंटी फूली मालती संकेट बट ॥ २ ॥ ४ ॥ 卐 ॥
परीसिष्ट ॥ सूहो ॥ झूमरो ॥ कमल मुख देखत
कौन अघाये ॥ सुनि री सखी लोचन अलि मेरे
मुदित रहे अरुझाये ॥ मुक्ता माल राजत ऊर

ऊपर जानो फूली बन राये ॥ गोबरधनधर अंग
अंग पर 'कृष्ण दास' बलि जाये ॥ २ ॥ २९ ॥
॥ 卐 ॥ कमल मुख देखत तृप्ति न होय ॥ यह
सुख कहा दुहागिन जाने रही हे निसा भरि
सोय ॥ १ ॥ ज्यों चकोर चाहत उडुराजे चंद
वदन रही जोये ॥ नेक अँकोर देति नहि राधा
चाहत पीय ही निचोये ॥ २ ॥ ऊन तो अपनो
सरवसु दीयो इक प्रान वपु दोये ॥ भजन भेद
न्यारा 'परमानँद' जानत वीरला कोये ॥ ३ ॥
॥ ३० ॥ 卐 ॥ तेरे कच बिथुरे मानौं नव घन
उदय आये दसन जोति दामिनि दरसाती ॥ ता
पर भ्रौंह धनुष बूंद सूरत स्रम ही बरखत पानी
॥ १ ॥ रोमावली किधौं हरित भूमि पर सुवन बनी
तेसीय बोलत पिक बानी ॥ तापर रिझे 'तानसेन' के
प्रभु अंग अंग सरसानी ॥२॥३१॥卐॥

[आगे देखो पत्रा २९४]

रथ यात्रा के पद.

साखी ॥ द्विज असाढी सरस दिन नछत्र पुष्य संजोग ॥ रथ सोभा रवि कोटि सम करत नंद सुत भोग ॥ १ ॥ ऋतु बरखा सुहावनि बरखैं मेघ मलार ॥ भोंम हरी हरखित सबैं चंद वधू चटसार ॥ २ ॥ सोर करत दादुर बने बोलत चात्रक मोर ॥ कोकिल कलरव बोल ही करत पपैया सोर ॥३॥ १ ॥卐॥ मंगला में ॥ राग सुहो बिलावल ॥ तिताल ॥ झूमक सारी हो तन गोरें ॥ जगमग रहयो जराव कोटी को छबि की उठत झकोरें ॥ १ ॥ रत्न जटित के तरल तरोना मानौं हो जात रवि भोरें ॥ दुलरी कंठ निरखि नकवेसर पिय दृग भये हैं चकोरें ॥ २ ॥ मंद मंद पग

धरत धरनी पर हंस तलसत चित चोरें ॥ 'स्याम दास' प्रभु' रसबस कर लीने चपल नैंन की कोरें ॥ २ ॥ २ ॥ 卐 ॥ सिंगार में ॥ अभ्यंग के ॥ पत्रा ८२।८३ सूं बोलनौं ॥ राजभोग आए छाक बीरी के ॥ समै राजभोग आरती ॥ सारंग ॥ तिताल ॥ यह ढोटा हठ हरत परायो मन ॥ देखत रुप ठगोरी सी लागत जगत विमोहन स्याम बरन तन ॥ १ ॥ दिन दिन चोंप चोगनीसी लागत पावस ऋतु मानौं नव तन घन॥ दामिनि कोटि पीतांबर की छबि 'परमानँद' राजति ब्रिंदाबन ॥ २ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ रथ में पधारे जब झांझ बजे मल्हारकी अलपचारी पीछें ॥ मल्हार ॥ चोताल ॥ कुंवर चलो जू आगें गहवर में जहां बोलत मधूरे मोर ॥ विगसत बन राजी कोकिला करत रोर ॥ १ ॥ मधुरे बचन सुनत

प्रीतम के लीनों प्यारी चित चोर ॥ 'गोविंद' बलि बलि पिय प्यारी की जोरि ॥ २ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ दूसरे भोग आए में ॥ मान ॥ मल्हार ॥ कुसुंभी बस्त्र ॥ तू चल नंद नंदन बन बोली ॥ करि सिंगार चंचल मृगनैंनी पहिरि कसूंभी चोली ॥ १ ॥ कुच कठोर नैंन अनियारे ले चल भेट अमोली ॥ 'कुंभन दास' लाल गिरिधर सौं मिलि अंतर पट खोली ॥ २ ॥ ७ ॥ 卐 ॥ आगम ॥ मलार ॥ आड चोताल ॥ आए माई बरषाके अगवानी दादुर मोर पपैया बोलें कुंजन बग पाँति उडानी ॥ १ ॥ घन की गरज सुनि सुधि न रही कछु बदरन देखि डरानी ॥ 'कुंभन दास' प्रभु गोबरधनधर लाल भए सुखदानी ॥ २ ॥ ८ ॥ 卐 चोताल ॥ गावत रसिक राय ब्रज नृपति कुंवर ॥ तीसरे सुर संच बांधि रत्न खचित अधोटी सोहत

दखन कर ॥१॥ राग मल्हार अलापत चोखी तानन मन हरयों गंधर्व खेचर ॥ 'गोविंद' प्रभु पर कुसुम बरखत कहेत जय जय जय सकल कला गुन प्रवीन हे अति सुघर ॥ २ ॥ ९ ॥ 卐 ॥ निरत ॥ आड चोताल ॥ स्याम देखि नाचत मुदित बन मोर ॥ ता ऊपर आनंद उमग भर सुनति मुरली कल घोर ॥ १ ॥ चहूँ दिस तें कोकिला कल कूजत और दादुर की रोर ॥ 'गोविंद' प्रभु सखा सँग लिए बिहरत बल मोहन की जोर ॥ २ ॥ ॥ १० ॥ 卐 ॥ पहिले दरसन में ॥ मलार ॥ धमार ॥ तुम देखो माई रथ बैठे गिरिधारी ॥ राजत परम मनोहर सब अंग संग राधिका प्यारी ॥१॥ मनि मानिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार सँवारी ॥ बिधि कर विचित्र रच्यो जो बिधाता अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ गादी सुरंग ताफता की

सुंदर फेरबाद छबि न्यारी॥ छत्र अनूपम हाटक कलसा झूमक लर मुक्ता री ॥ ३ ॥ चपल अश्व देव चलत हंस गति उपजत हे छवि न्यारी ॥ दिव्य डोर पचरंग पाट की कर गहि कुंजबिहारी॥ ॥ ४ ॥ बिहरत ब्रज बीथन ब्रिंदाबन गोपीजन मन ढारी ॥ कुसुम अंजुली बरखत सुर मुनि 'परमानँद' बलिहारी ॥ ५ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ दूसरे भोग आये में ॥ लाल वस्त्र ॥ मल्हार ॥ चोताल ॥ आई जू स्याम जलद घटा ओल्हर चहूँ दिस तें घनघोर॥ दंपति अति रस रंग भरे बांह जोटी फिरति कुसुम बीनत कालिंदी तटा ॥ १ ॥ नेंन्ही नेंन्ही बूंदन बरषन लाग्यों तेसी ये चमकत बीज छटा ॥ 'गोविंद' प्रभु प्रिय प्यारी उठि चलि ओढें लाल पट दौरि लिओ जाय बंसीबटा ॥ २ ॥ १२॥ 卐 चूनरी ॥ मान ॥ कब की कहेति प्यारी अज़ हू

२७४ रथयात्रा के पद, राग मल्हार चोताल. गु.
न रिस गई मोहन मौन धर कहत कछू न री॥
कान न कछू करत सन्मुख ही लरत ज्यों ज्यों
बरजत त्यों त्यों भई अति दूनरी॥ १ ॥ बावरी
भई री प्यारी मेरे जान पिय कहयो कहा काहू
कोन कहयों मानें तुव हृदो सूनि री॥ 'गोविंद'
प्रभु पिय चरन परस आंको भर मिल रंग
रहयो जेसे हरद चूनरी ॥ २ ॥ १३ ॥ 卐 ॥
कोन करे पटतर तेरी गुन रुप रास राधा प्यारी॥
श्रिय प्रभृति जेती जग जुवती बार फेर डारों तेरे
रूप पर ॥ १ ॥ राग मल्हार अलापत सकल
कला गुन प्रवीन हे री तूं सूघर॥ 'गोविंद' प्रभु
कौं तू न्यायन बस कर कहत भलें भलें भलें ब्रज
राज कुंवर॥ २ ॥ १४ ॥ 卐 ॥ निरत ॥ चोताल
॥ ब्रिंदाबन कनक भूमि निरतत ब्रज नृपति
कुंवर॥उघटत सब्द सुमुखी रसिक ग्रग्रतततततत

थेई थेई गति लेति सुघर ॥ १ ॥ लाल काछ कटि किंकिनी पग नूपुर रूनु झुनात बीच बीच मुरली धरत अधर ॥ 'गोविंद' प्रभु के जू मुदित सँग सखा करत प्रसंसा प्रेम भर ॥ २ ॥१५॥ 卐 ॥ धमार ॥ तुम देखो माई रथ बैठें नंदलाल॥ अति बिचित्र पहिरे पट झीनों उर सोहे बनमाल ॥ १ ॥ सुंदर रथ मनि जटित मनोहर सुंदर हे सब साज ॥ सुंदर तुरंग चलत धरनी पर रहयो घोष सब गाज ॥ २ ॥ ताल पखावज बीन बांसुरी बाजत परम रसाल ॥'गोविंद' प्रभु पिय पर बरषत हैं विविध कुसुम ब्रजबाल ॥ ३ ॥१६॥卐॥ तिसरे भोग आये में ॥ टिपारो॥ चोताल ॥ पावस नट नटयों अखारो ब्रिंदाबन अवनी रँग॥ निरतत गुन रास बरुहा पपैया सब्द उघटत और कोकिला कल गावत तान तरँग ॥१॥

जलधर तहाँ मंद मंद सुलप सच गति भेद
उरप तिरप मान लेति सरस मृदंग ॥ 'गोविंद'
प्रभु गोबरधन सिंहासन पर बैठें सुरभी सखा
सभा मधि रीझे वह ललित त्रिभंग ॥२॥१७॥卐॥
चोताल ॥ अरी यह नागर नंदलाल कुंवर मोरन
संग नाचैं ॥ कूजत कटि किंकिनी कल नुपूर पद
साचैं ॥ १ ॥ उरप तिरिप सुलप लेत धरत चरन
खांचे ॥ वारंवार हरखि निरखि चंचल
गति सांचे ॥ २ ॥ उदित मुदित सघन गगन भेद
कोउ न बांचे ॥ कोकिला कल गान करत पंचम
सुर सांचे ॥३॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधर विट्ठलेस
बांचे॥ बिहरत बन रास बिलास ब्रिंदाबन राचैं ॥४॥
१८ ॥ 卐 ॥ चोताल ॥ अरी इन मोरन की भाँति
देख नाचत गुपालां ॥ मिलवत गति भेद नीके
मोहन नटसाला॥१॥गरजत घन मंद मंद दामिनी

दरसावे ॥ रमक ऊमक बूंद परे राग मल्हार गावे ॥ २ चातक पिक सघन कुंज वार वार कूजे ब्रिंदाबन कुसुम लता चरन कमल पूजे ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवें ॥ वार फेर भक्ति उचित 'परमानँद' पावें ॥ ४ ॥ १७॥ 卐 ॥ तिताल ॥ श्रीवृंदावन भुवि कुंदादिकयुत मंदानिल रुचिरे ॥ ध्रु० ॥ पुलिनोदित नव नलिनोदर मिल दलिनोदित रसगाने ॥ कर्णादिक पुट चरणांबुज ध्वनि चारु हरिणाक्षि बलिते ॥१॥ निज रसमयता प्रकटन परितः प्रकटित रासविहारे ॥ गिरिधारण रतिहारण कारण ममरतिरस्तु सदारे ॥ २ ॥ १८ ॥ 卐 ॥ चोथे भोग के छेल्ले दरसन में ॥ धमार ॥ जय श्रीजगन्नाथ हरि देवा ॥ रथ बैठें प्रभू अधिक बिराजत करें जगत सब सेवा ॥१॥ सनक सनंदन ओर ब्रह्मादिक इंद्रादिक जुरि आये ॥

अपनी अपनी भेट सबे ले गगन बिमानन छाये
॥२॥ रत्न जटित रथ नीको लागत चंचल अश्व
लगाये ॥ नर नारी आनंद भये अति प्रमुदित
मंगल गाये ॥ ३ ॥ गारी देत दिवावत अपन पैं
यह बिध रथ हि चलाये ॥ 'रामराय' श्रीगोबर-
धनबासी नगर उडीसा आये ॥ ४ ॥ १९ ॥ 卐 ॥
वा पट पीत की फेहेरान ॥ कर गहि चक्र चरन
की धावन नहिं बिसरत वह बान ॥ १ ॥ रथ तें
उतर अवनि आतुर व्है कच रज की लपटान ॥
मानों सिंह सैल ते उतर्यो महा मत्त गज जान
॥ २ ॥ धन्य गुपाल मेरो प्रन राख्यो भेट वेद
की कान ॥ सोई अब 'सूर' सहाय हमारे प्रकट भये
हरि आन ॥ ३ ॥ २० ॥ 卐 ॥ समै भोग आरती ॥
चोताल ॥ आयो आगम नरेस देस देस में
आनंद भयो मनमथ अपनी सहायकों बुलायो है

॥ मोरन की टेर सुनि कोकिला कुलाहल तेसोई दादुर हिलि मिलि सुर गायो हे॥१॥ चढयो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी। अंकुस बंकुस दे दे चपला चलायो हे ॥दामिनी ध्वजा पताका फरहरात सोभा बाढी गरज गरज धों धों दमामो बजायो हे ॥ २ ॥ आगें आगें धाय धाय बादर बरसत आय ब्यारन की बहुकनि ठौर ठौर छिरकायो हे॥हरी हरी भूमि पर बूढन की सोभा बाढी बरन बरन रँग बिछोनां बिछायो हे ॥ ३ ॥ बांधें हें बिरही चोर कीनें। हे जतन रोर संजोगी साधन सौं अति सुख पायो हे ॥ 'नंद दास' प्रभू नंद नँदन कों आग्याकारी अति सुखरासी ब्रजवासी मन भायो हें॥४॥ २१ ॥ 卐 ॥ आड चोताल ॥

गाय सब गोबरधन तें आई ॥ बछरा चरावत श्री नंद नँदन बैनू बजाय बुलाई ॥ १ ॥ घेरी न घिरत

गोप बालक पें अति आतुर वे धाई ॥ बाढी प्रीत मदन मोहन सों दूध की नदी बहाई ॥२॥ निरख स्वरुप ब्रजराज कुंवर को नैंनन निरख निकाई ॥ 'कुंभन दास' प्रभू के सन्मुख ठाढी भई मानौं चित्र लिखाई ॥३॥卐॥ सेन भोग आये ब्यारु दूध के मल्हार में गावें॥ समै सेन ॥ अडानो चोताल॥ सुंदर वदन री सुख सदन स्याम को पत्रा १३ सूं बोलनो॥ मान, पोढायवे के, मल्हार के, पवित्रा एकादसी ताँईं॥ब्रज सावन वदी ७ ताँई छाक के मलार के गावें ॥ इतिलेख ॥ धमार ॥ आज माई रथ बैठें गिरिधारी ॥बाम भाग बृषभानु नँदिनी पहिरे कसूंभी सारी ॥ १ ॥ तेसोइ घन उनयो चहूँ दिस तें गरजत है अति भारी ॥ तेसेई दादूर मोर करत रट तेसी भूमि हरियारी ॥ २ ॥ सीतल मंद बहत मलयानिल लागत हे

सुखकारी ॥ नंद नँदन की या छबि उपर 'गोविंद'
जन बलिहारी ॥ ३ ॥ २३ ॥ 卐 ॥ आडचोताल॥
आज ब्रज सोभा की निधि आई॥ जसोदा नँदन
रथ पर बैठें ब्रज जन अति सुखदाई ॥ १ ॥ कुलह
सेत सेत ही बागो ओर सुथन सेत सुहाई ॥
भूषन विविध कहालों बरनो बरनत बरनी न जाई॥
॥२॥ब्रज वधू मिलि रथ खैंचति अपनें घर पधराई
॥ विविध भाँति सामग्री सीतल करि मनुहार
लिवाई॥३॥जल अचवाय बीरी खवावति प्रेम हरखि
न समाई ॥ करत आरती जुगल रुप पर न्योछा-
वर बहुत दिवाई ॥४॥ इही विधि ब्रज घर घर प्रति
आवत भक्त जनन सुखदाई॥ 'ब्रजपति' तब निरखि
सुख बाढ्यों मात चरन बलि जाई ॥५॥२४॥卐॥
धमार ॥ तुम देखो सखी री आज नैंन भरि हरि
जू के रथ की सोभा ॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ

व्रत कीजियत हे जिंहिं लोभा ॥ १ ॥ चारु चक्र मनि खचित मनोहर चंचल चमर पताका ॥ स्वेत छत्र जनु ससि प्राची दिस उदित भयो निसि राका ॥ २ ॥ स्याम सरीर सुदेस पीतपट सीस मुकुट और माला ॥ मानौं दामिनी धन रवि तारा गन उदित इक ही काला ॥ ३ ॥ उपजत छबि कर अधर संख ध्वनि सुनियत सब्द प्रसंसा ॥ मानौं अरुन कमल मंडल में कूजत हे कल हंसा ॥ ४ ॥ आनंदित पितु भ्रात जननी सब कृष्ण मिलनि जीय भावे ॥ 'सूर दास' गोकुल के वासी प्राननाथ बर पावें ॥ ५ ॥ २५ ॥ 卐 ॥

तुम देखो भाई रथ बैठें जगन्नाथ ॥ आसपास जुवति जन सोभित ओर भक्तन सब साथ ॥१॥ ताल पखावज बैनू बांसुरी सबें मनोहर साज॥ तारी दे दे हँसै हँसावै बेगि चलो महाराज ॥२॥

मुँग चिरोजी बीज के लडुबा भरि भरि लीने थार॥ मिसरी पना बहुत कर लीनो जांबु आंब रसाल ॥ ॥ ३ ॥ सुर विमान सब कौतिक भूलें वरखत कुसुम अपार ॥ माधो दास' चरन को सेवक परयों रहत दरबार ॥ ४ ॥ २६ ॥ 卐 ॥ तुम देखो माई हरि जू के रथ की सोभा॥ प्रात समय मानौं उदित भयो रवि निरखि नैंन अति लोभा ॥ १ ॥ मनिमय जटित साज सरस सब ध्वजा चमर चित चोभा ॥ मदन मोहन पिय मध्य बिराजत मन सिज मन के छोभा ॥ २ ॥ चलत तुरंग चंचल भू ऊपर कहा कहुँ यह ओभा ॥ आनंद सिंधु मानौं मकर क्रीडत मग्न मुदित चित चोभा ॥ ३ ॥ यह बिध बनी ब्रज बीथन महियाँ देत सकल आनंद ॥ 'गोविंद' प्रभू पीय सदा बसो जीय ब्रिंदावन के चंद ॥ ४ ॥ २७ ॥ 卐 ॥ तुम

देखो सखी रथ बैठें नंदलाल ॥ अति विचित्र
पहिरें पट झीनो उर सोहे बनमाल ॥ १ ॥ सुंदर
रथ मनिजटित मनोहर सुंदर हे सब साज ॥ सुंदर
तुरंग चलत धरनी पर रहयो घोष सब गाज ॥२॥
ताल पखावज बीन बांसुरी बाजत परम रसाल॥
'गोविंद' प्रभु पिय पर बरखत हें विविध कुसुम
व्रज बाल ॥ ३ ॥ २८ ॥ 卐 ॥ तुम देखो सखी
रथ बैठे व्रजनाथ ॥ संकर्षण के संग बिराजत
गोप सखा ले साथ ॥ १ ॥ इक ओर राधा जुवती
सब छत्र चमर ललिता के हाथ ॥ बिबिध भांत
गोबरधनधारी 'कृष्ण दास' कीयो सनाथ ॥ २॥
॥२९॥卐॥ तुम देखो माई रथ बैठें गुपाल ॥ हीरा
मोती पांत बनी हें बिच बिच राजत लाल ॥१॥
बेरख फरहरात कलसान पर अरुन हरित बहु
रंग ॥ अति ही विचित्र रच्यो विश्वकर्मा सोभित

चार तुरंग ॥ २ ॥ खैंचत ग्वाल बाल सब संग के करत कुलाहल भारी ॥ किलकत हँसत दोउ री मैया मुदित होत गिरिधारी ॥ ३ ॥ खेलन चले सुभग ब्रिंदाबन सोभा बरनि न जाई ॥ या छबि पर तन मन धन बारत 'दास' परम निधि पाई ॥ ४ ॥ ३० ॥ 卐 ॥ तुम देखो सखी री रथ बैठें हरि आज ॥ अग्रज अनुज सहित स्याम घन सबे मनोहर साज ॥ १ ॥ हाटक कलसा ध्वजा पताका छत्र चमर सिरताज ॥ तुरंग चाल अति चपल चलें हें देख पवन मन लाज ॥ २ ॥ सुदी आषाढ दूज सुभ दिन पुष्य नक्षत्र सुभ योग ॥ बनमाला पीतांबर ओढें धूप दीप बहु भोग ॥ ३ ॥ गारी देत सबे मन भाई कीर्ति अगम अपार ॥ 'माधो दास' चरनन को सेवक जगन्नाथ श्रुतिसार ॥ ४ ॥ ३१ ॥ 卐 ॥ रथ चढि आवत

गिरिधर लाल ॥ रत्न खचित मुक्ता फल लागे नव पन्नन की माल ॥ १ ॥ बर दुलरी सिर मोर चंद्रिका कुंडल गंड बिसाल ॥ बसन पीत परिधान मनोहर बिमल गुंज बनमाल ॥२॥ सोभित सुभग चारु लोचन मृग मोहन मनमथ साल ॥ झलकत ललित कपोल लोल पर स्त्रम जल बूंद रसाल॥३॥ अमर नारि अवलोक रुप छबि देख डिगै दिगपाल ॥ तन मन धन बारत 'परमानँद' विवस भई ब्रज बाल ॥४ ॥ ३२ ॥ 卐 ॥ रथ चढि चलत जसोदा आंगन ॥ बिबिध सिंगार सकल अंग सोभित कोटि अनंगन ॥ १ ॥ बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नंद नँदन ॥ गरें बिराजत हार कुसुमन के चराचित चोवा चंदन ॥२॥ अपने अपने गृह पधरावत सब मिलि ब्रज जुवती जन॥ हर्षित अति अरपत सब सरवसु वारत हैं तन मन

घन ॥ ३ ॥ सब ब्रज दे सुख आवत घर कौं, करत
आरती तत छन ॥ ‘रसिक’ दास हरि की यह
लीला बसो हमारे ही मन ॥ ४ ॥ ३३ ॥ 卐 ॥
ब्रज मे रथ चढि चले री गुपाल ॥ सँग लिए गोकुल
के लरिका बोलत बचन रसाल ॥ १ ॥ स्त्रवन
सुनति घर घर तें दौरी देखन कौं ब्रज बाल ॥
लेत फेर कर हरि की बलैया वारत कंचन माल
॥ २ ॥ सामग्री ले आवत सीतल लेत हरखि
नंदलाल ॥ बाँट देत और ग्वालन कौं फूले गावति
ग्वाल ॥ ३ ॥ जय जयकार भयो त्रिभुवन में
कुसुम बरखत तिंहिं काल ॥ देखि देखि उमगे
ब्रजबासी सबे देत कर ताल ॥४॥ यह बिधि बन
सिंघ द्वार जब आवत माय तिलक करि भाल॥
ले उछंग पधरावत घर में चलत मंद गति चाल
॥ ५ ॥ कर न्योछावर अपने सुत की मुक्ता फल

भरि थाल ॥ यह लीला रस ‘रसिक’ दिवा निसि स्मरत होत निहाल ॥ ६ ॥ ३४ ॥ 卐 ॥ मैया में रथ चढि डोलुंगो ॥ घर घर तें सब संग खेलन को गोप सखन को बोलुंगो ॥१॥ मोहि जडाय देहु अति सुंदर सगरो साज बनाय ॥ कर सिंगार ता ऊपर मोकौं राधा संग बैठाय ॥ २ ॥ घर घर प्रति हों जाउं खेलन संग लेहु ब्रज बाल ॥ मेवा बहुत मँगाय मोहि दे फल अति बडे रसाल ॥ ३ ॥ सुत के बचन सुनत नँदरानी फूली अंग न माय सब बिधि सहित हरि रथ बैठारे देखि ‘रसिक’ बलि जाय ॥ ४ ॥ ३५ ॥ 卐 ॥ रथ पर राजत सुंदर जोरी ॥ श्रीघनस्याम लाडिलो सुंदर, श्रीराधा जू गोरी ॥ १ ॥ ब्योम विमान भीर भई सुर मुनि जय जय सब्द उचारी ॥ ‘कुंभनदास’ लाल गिरिधर की बानिक पर बलिहारी ॥ २ ॥

३६ ॥ 卐 ॥ लाल माई खरेई बिराजत आज ॥
रत्न खचित रथ उपर बैठें नवल नवल सब साज
॥ १ ॥ सूथन लाल काछनी सोभित उर वैजं-
ती माल ॥ माथे मुकुट ओढें पीतांबर अंबुज
नैंन बिसाल ॥ २ ॥ स्याम अंग आभूषन पहिरे
झलकत लोल कपोल ॥ बार बार चितवत सब ही
तन, बोलत मीठे बोल ॥३॥ यह छबि निरख निरख
व्रज सुंदरी लोचन भर भर लेहो ॥ फिर फिर झांक
झांक मुख देखो रोम रोम सुख पैंहो ॥ ४ ॥ उतर
लाल मंदिर में आये मुरली मधुर बजाय ॥ निरख
निरख फूलत नंदरानी मुख चुंबत ढिंग
आय ॥ ५ ॥ अति सोभित कर लिये आरती करत
सिहाय सिहाय ॥ 'श्री विठ्ठल गिरिधरनलाल'
पर वारत नाहिं अधाय ॥ ६ ॥ ३७ ॥ 卐 ॥
रथ बैठें गिरिधारी आजु माई चलहुन देखन

जैयें ॥ मोर मुकुट बनमाल बिराजत देखेई सचु पैयें ॥ १ ॥ श्री ब्रिंदा बिपुन भूमि हरियारी चलत अंबु हंसन गति लियें ‘परमानँद’ यह लीला गावत प्रेम मगन व्है रहियें ॥ २ ॥ ३८ ॥卐॥

लाल बस्त्र ॥ कसुंभा छठ ॥ समै सिंगार में ॥ आडचोताल ॥ लाल माई बांधे कसूंभी पाग ॥ कसूंभी छडी हाथ में लीए भींज रहे अनुराग ॥ १ ॥ कसूंभोई कटि बन्यों हे पिछोरा कसूंभी उपरेना ॥ कसूंभी बात कहत राधा सौं कसूंभें बने दोऊ नैंना ॥ २ ॥ हरित भूमि जमुना तट ठाढे गावत राग मल्हार ॥ ‘श्री’ विठ्ठल गिरिधरन छबीलो स्याम घटा अनुहार ॥ ३ ॥ ३९ ॥卐॥

राजभोग में ब्रज पर नीकी आजु घटा ॥ नैंन्ही नैंन्ही बूंद सुहावनी लागत चमकत बीज छटा ॥ १ ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा ॥

तेसोई सुर गावत चातक पिक प्रकटयों हे मदन भटा ॥ २ ॥ सब मिलि भेट देत नँदलाल हि बैठें ऊंचे अटा ॥ 'कुंभन दास' गिरिधरनलाल सिर कसूंभी पीत पटा ॥ ३ ॥ ४० ॥ 卐 ॥ समै भोग आरती ॥ आज कछू कुंजन में बरखासी ॥ दल बादर में देख सखी री चमकत हे चपलासी ॥ १ ॥ नैंन्ही नैंन्ही बूंदन बरषन लागी पवन चलत सुख रासी ॥ मंद मंद गरजन सुनियत हें नाचत मोर कलासी ॥ २ ॥ इंद्र धनुष बग पंगति देखियत भूली मृग माला सी ॥ चंद बधू छबि छाय रही हे गिरि पर स्याम घटा सी ॥ ३ ॥ उम गत ही कछु हँस कंपत हे बोलत हे कोकिला सी ॥ 'ब्यास दास' चातक की रटना जल पीवत भई प्यासी ॥ ४ ॥ ४१ ॥ 卐 ॥ आज बन भींजत कौन कुमार ॥ कौ अब सेर किये हिये में

बैठीं ही घर बार ॥ १ ॥ का की भींजे पाग कसूंभी सोंधे भींजे बार ॥ कटि पिछोरा भींजे उपरना भींजे मोतिन हार ॥ २ ॥ कोन चढति भींजे वृक्षन पर कोन बुलावत गाय ॥ 'श्रीविठ्ठल गिरिधर तेरे प्रीतम नव निकुंज के राय ॥ ३ ॥ ॥ ४२ ॥ 卐 ॥

भवन मेरे केसे लागत नीके ॥ तब हि लाल आवत यह मंदिर खरे भावते जिय के ॥ १ ॥ कसूंभी पाग खुभि रही नीकी विकसित नंद किसोर ॥ तेसी ये स्याम घन घटा जूरि आइ अरु बोलत बन मोर ॥ २ ॥ ता दिन विधना भली बनाई अकेली ही घरमांऊ ॥ 'श्री विठ्ठल' गिरिधरन लाल सौं बातन ही भई सांऊ ॥ ३ ॥ ४३ ॥ 卐 ॥

लाल की सोभा कहेत न आवे ॥ संध्या समें खिरक में ठाढे अपनी गाय दुहावे ॥ १ ॥ लाल पाग सिर उपर सोहे मोर

चंद छबि पाबे ॥ मोसों कहयो सुनि जा तू बातें छतना बूंद चुचाबे ॥ २ ॥ लटकत चलत जब ही घर अपने जुवतिन बोल सुनावे ॥ श्री विठ्ठल गिरिधरनलाल छबि जशोमति के जिय भावे ॥ ३ ॥ ४३ ॥ 卐 ॥ समै सेन ॥ पहिरे सुभग अंग कसूंभी सारी सुभग भूमि हरियारी तामें चंद वधू सोहे ॥ हरि के संग ठाढी कंचुकी उतंक गाढी बाल मृग लोचनी देखत मन मोहे ॥ १ ॥ तेसी ये पावस ऋतु तेसेई उनये. मेघ तेसीये बानिक बनी उपमा कों कोहे ॥ 'कुंभन दास' स्वामिनी विचित्र राधिका भामिनी गिरिधर पिय मुख इकटक जोहे ॥ २ ॥ ४४ ॥ 卐 ॥ तुम पोढो हों सेज़ बनाऊं ॥ चांपो चरन रहु पाटीतर मधुरेस्वर केदारो गाऊं ॥ १ ॥ सहचरी चतुर सबे जुरि आई दंपति सुख नैनन दरसाऊं ॥ 'आसकरन'

प्रभु मोहन नागर यह सुख स्याम हृदय हों पांऊ
॥ २ ॥ ४५ ॥ 卐 ॥ इति लेख ॥ सूहा बिलावल ॥
देखिरी देखि वाके चंचल तारे ॥ कमल मीन कहे
कहाँ अति छबि खंजन हुं न जात निहारे ॥ १ ॥
वे देखि चारु कुटिल भ्रुव ऊपर कुंचीत अलक
मनोहर बारे ॥ बीडित भजत मानौं छांडे रथ जनु
ससाकि ससि लंगर डारे ॥२॥ वे देखि निमिष मन
मुरली पर करि कर मुख नैंन इक भए चारे ॥
मानौं जल रुहसूं वेरु तजे बिधु करत वाद वाहन
चुचकारे ॥ ३ ॥ हरि को रुप सकल ब्रज मोहन
सब जुवती जन प्रान धन वारे ॥ 'सूर' सखी
निज रही चित्तें तन मन बचन चित्त अनत न
टारें ॥ ३२ ॥ 卐 ॥ दोऊ अलसाने राजत प्रात ॥
श्रीवृषभानु नँदिनि नंद सुत रसिक सलोने गात.
॥१॥ नील पीत अंबर लपटानों छिनु छिनु अधिक

सिहात ॥ मानौं घन दामिनि अपुनी छबि होति एकत्र विकसात ॥ २ ॥ पवन मंद अरबिंद मनोहर मिलि अंग अंग लपटात ॥ 'सूर' सुखद गिरिधरन छबिलो निरखि अनंग लजात ॥ ३ ॥ ॥ ३३ ॥ 卐 ॥ झुमरो ॥ बने हे बिसाल कमल दल नैंना ॥ ताहू में अति चारु विलोकनि गूढ भाव सूचित सखी सेना ॥ १ ॥ वदन सरोज निकट कुंचित कच मानौं हू मधुप आये रस लेना ॥ तिलक तरुन ससि कहेत कछुक हँसि मोहन मधुर मनोहर बेना ॥ २ ॥ मदन नृपति के देस महा मद बुधि बल बसि न सकत हे चेना ॥ 'सूरदास' प्रभु दुति दिन दिन पढवत चरित्र चिनोती देना ॥ ३ ॥ ३५ ॥ 卐 ॥ बने हो रसमसे आये प्रात ॥ आलस भरे वदन की सोभा निरखि लजित जल जात ॥ १ ॥ संध्या वदे बोल कीये

साँचे काहे को लाल लजात ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु
गिरिधर चितवत जुवती मृगीन की घात ॥ २ ॥
॥ ३६ ॥ 卐 ॥ बने हो रसमसे आये प्रात ॥
प्यारी नख पद रत्नावली रस रंजीत नवरंग गात
॥ १ ॥ नख रेखा मोह्न जुवतीन मन प्रमुदित
पुलकि जँभात ॥ 'कृष्ण दास' गिरिधर चित
चंचल ज्यों तरुवर के पात ॥ २ ॥ 卐 ॥ तिताल ॥
बिहारन मोहे स्याम धनी ॥ अंबुज नैंन अहो मृग
नैंनी काजर रेख अनी ॥ १ ॥ दसन कुंद ओर
अरुन अधर बिंब नासा जलद मनी ॥ 'कृष्ण
दास' प्रभु रिझि विवस भए मूरति चित्र ठनी
॥ २ ॥ ३८ ॥ 卐 ॥ बिहारन बिलसति स्याम
धनी ॥ नंद नंदन वृषभानु नँदिनी रति रस केलि
ठनी ॥ १ ॥ स्याम सौं रुसनो प्रीय तन में ज्यों
घन तन इत ही बनी ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु रस

बस कर लीए गुन गावत सजनी ॥ २ ॥ ३९ ॥

॥ 卐 ॥ स्यामा स्याम आवत कुंज महेल तें रगमगे रगमगे ॥ लटपटी पाग सिथिल कटि किंकिनि अरुन नैंन चारों जाम जगे ॥ १ ॥ सब सखी सुधराई गावत बीन बजावत सरस संगीत पगे ॥ 'हरि दास' के स्वामी स्मामा कुंज विहारी की कटाच्छ पर कोटिक काम डिगे ॥ २ ॥ ४० ॥ 卐 ॥

हरि मुख निरखत नैंन लुभाने ॥ ज्यों मधुकर रवी कमल कोस वस फिर हू तो न उडाने ॥ १ ॥ कुंडल मकर कपोलनकी छबि जानो रेनि बीहाने ॥ दृग चंचलता देखत ही मानौ खंजन मीन लजाने ॥ २ ॥ अरुन अधर द्युती वज्रपात मिलि नव घन रूप समाने ॥ 'सूर दास' यह स्याम पीत पट क्यों हूं न जात बखाने ॥ ३ ॥ ४१ ॥ 卐 ॥ परिसिष्ट ॥ उष्णकाळ ॥ सारंग ॥

२९८ उष्णकाल, खसखाना, सारंग, चोताल. सो.

चोताल ॥ जेष्ठ मास तपत धाम एसे में कहाँ सिधारे स्याम एसी कौन चतुर नार जाको बीरा लीनों है ॥ नेक किधों कृपा कीजे हम ही कुं सुख दीजे जैये फिर वाके धाम जासूं नेह नवीनो हें ॥१॥ बांह पकरि ले गइ सैयां पर दीये बैठाई अरगजा अंग लगाय हीयो सितल किनो है ॥ 'रसिक' प्रीतम कंठ लगाये रस में रस मिलाये अरसपरस केलि करत प्रितम बस कीनों है ॥ २ ॥ ५५ ॥ 卐 ॥ परिसिष्ट ॥ खसखानो ॥ सोहत रंग भरे दोऊ उसीर महल में छूटति फुहारे गुलाब नीर ॥ बरुनी अलक भुव बूंद फबि है मान हु सरद कमल उपर ओसकन जेसे दोऊ अंग लपटे हे चीर ॥ १ ॥ गावत जहाँ दंपति बजावत बिसाखा बीन ठाढी है प्रवीन सखी सोभा सुर तरु तीर ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर

छबि निरखति सावन सौं ऊर लायो रस कुंज पुंज धीर समीर ॥ २ ॥ ५६ ॥ 卐 ॥ परिसिष्ट ॥ नाव ॥ जमुना जल क्रीडत स्याम चहूँ ओर बनी भाम बैठे नाव मध्य लाल रावटी रची ॥ फूलन के बंगला मनोहर राजत झुकि रहि ब्रिदा लता हंस मोर सुकन की पाँति रची ॥ १ ॥ कोकिला अलापत तान लेत अति सुखकारी गावत प्रवीन प्यारी सारंग राग मची ॥ छूटत जल जंत्रन फूही मानौं सुमन माल गुही रची 'ब्रजाधीस' मध्य स्याम मुहुरत देखि ललची ॥ २ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ जमुना तीरन अहीरन भीरन मोहन नाव चलावत जाइ ॥ सुंदर मुख अवलोकित सब त्रिय अंतरंग मानौं नव निधि पाइ॥१॥ सुंदर सुखद स्त्रवत अंग अंग पीय अति मृदु बेन सुनति को अघाइ ॥ श्री 'विट्ठल गिरिधर' बिनु

देखे को कर धीर रहे मेरी माई ॥ २ ॥ १२॥卐॥ परिसिष्ट ॥ वर्षा ऋतु ॥ हमीर ॥ चोताल ॥ बरन बरन बादर मन हरन उदे करन काम धाम हुं तें निकसि मानौं केसे नीके लागे ॥ स्याम घटा मधि भाँमिनि दामिनि राजत लाजत दुरे होत कबहुक बहु प्रगट होत अरुन नैंन एसें लागत मानौं सकल निस के जागे ॥ १ ॥बिच बिच पीत बसन मोर मुकुट इंद्र धनुष मंद मंद मुरली बाजें पिया संग अनुरागे ॥ 'सूर दास' मदन मोहन आपु रिझे रस भींजे गावत गुन नवल किसोर तेऊ बड भागे ॥ २ ॥ ५ ॥卐॥ स्नान यात्रा ॥ परिसिष्ट ॥ बिलावल ॥ धमार ॥ जल क्रीडा सुख अति उपजायो ॥ रास रंग मन तें नहि भुलत उहे भेद मन आयो ॥ १ ॥ जुवती जन कर जोरि मंडली स्याम नागरी बीच ॥

चंदन अंग कुँमकुमा छूटत जल मिल तट भई कीच ॥ २ ॥ जो सुख स्याम करत जुवतीन संग सो सुख तिहुंपुर नाहि॥ 'सूर स्याम'. देखे नारिन को रिझि रिझि लपटाई ॥ ३ ॥ २४ ॥卐॥ बिहरत है जमुना जल स्याम ॥ राजत है दोऊ बांहा जोरि दंपति और ब्रज वाम ॥ १ ॥ कोऊ ठाढी जल जानु जंघलौं कोउ कटि हृदय ग्रीव ॥ यह सुख बरनि सके एसो को सुंदरता की सीव॥२॥ स्याम अंग चंदन की आभा नागरि केसर रंग॥ मलयज पंक कुँमकुम मिलि के जल जमुना इक रंग ॥ ३ ॥ निस स्त्रम मिट्यो तन आलस परिहार जमुना भई पावन ॥ 'सूर' स्त्रम जल मध्य जुवतीगन जन के मन भावन ॥४॥ १५॥卐॥ परिसिष्ट ॥ सूहो ॥ ताल झुमरो ॥ आजु ओर छबि नंद कुमार ॥ मिलि रस रुचि लोचत भए

अंतर चितवत चित तुह्मारी और ॥ १ ॥ प्रगटति पीठ वलय कर कंकन दिखियतु हार हिये विनु डोर॥ पलटत पीत बसन दोऊ एते अधरन अंजन नैंन तंबोर॥२॥नख सिखलों सिगार अटपटो पाये मानौं हु पलान चोर ॥ फूले फिरत दिखाबत लोगनि निडर भये दे हँसन अकोर ॥ ३ ॥ देखत बनैं कहत न आवैं वयस मधि बरनत कबतक ठोर ॥ अचरज क्यौं न होइ इन बातनि 'सूर' गहन देख्यौं बिनु भोर ॥ ४ ॥४२॥ 卐 ॥ आवत स्याम तिया रस माते ॥ दोर जात संग कोइ नाहि ज्यों गज मद ऊर चुचाते ॥ १ ॥ कौन तिया के बचन बिधे हो कौन ही के घर जाते ॥ साँच बचन तुम कबहु न बोलत जुठी बनावत बातें॥ ॥ २ ॥ कुटिल कपटी लबार लालची चोर चतुर रंग राते ॥ 'धोंधी' के प्रभु जाऊ जहाँ तहाँ

चंचल नैंन सुहाते ॥ ३ ॥ ४३ ॥ 卐 ॥ परिसिष्ट॥
परदनी॥ सारंग ॥ झूमरो ॥ आज अति सोभित हे
व्रजनाथ ॥ स्वेत परदनी अरु उपरेनी चंदन
लाग्यो गात ॥ १ ॥ मोतिन माल बिराजत उर
पर लीए कमल करि हाथ ॥ 'सूर दास' उपमा
कहा बरनों गिरि गोबरधन नाथ ॥ २ ॥५७॥ 卐
परिसिष्ट ॥ कसूंभी छठ ॥ उवटना के ॥ भैरव ॥
चोताल ॥ ग्रीष्म तपत बरषा ऋतु आगम भयो
उवटि अंग अंग प्यारी जूगत बनायो ॥ करत
सिंगार सुरंग बसन मुक्ता मनि भूषन प्रथम समागम
आवत कुंज सुमनायो ॥ १ ॥ कोकिला पिक
बंदी जन दादुर प्रकट रुप उदित बरषा स्वरुप घन
झरि लायो ॥ 'नंद दास' पूरी आस बन बेलि
हरित भई भरी रहे रुख रसीली निरखि बडायो ॥
॥ २ ॥४६॥ 卐॥ परिशिष्ट ॥ स्नान यात्रा ॥ लेख ॥

समै आरती ॥ कल्यान ॥ धमार ॥ आज बजाई मुरली मनोहर सुधि न रही री कछु मो तन मन में ॥ हो जल जमुना भरन जात ही सो वे कान्ह ठाढे श्रीब्रिंदावन में ॥ १ ॥ मोर मुकुट माथे अति राजत कनक कुंडल सोहत कानन में ॥ 'ब्रह्मदास' प्रभु मोहि लई हो गावत राग सुरन में ॥ २ ॥२६॥ 卐 ॥ मकर संक्रांत ॥ गोरी ॥ चोताल ॥ हँसत गुपाल कहत गोपन सौं किन मेरी गेंद चुराई जु ॥ सुनि हो स्याम हम जानि॥लई तुम मिलन मिस जुठी लगाई जु ॥१॥ ग्वालन संग खेलत हें नीके इन को लालच आई जु ॥ बात बनावत नैंन चलावत इन में कहा भलाई जु ॥ २ ॥ लेहो ढंढोर कौन पें गेंदुक तुम पें लाल कहा आंई जु ॥ 'कुंभन दास' प्रभु गोंवरधनधर धर इक गई द्वे पाई जु ॥३॥२९॥卐॥इति॥

॥ प्रार्थना ॥

१ धमार राग... ॥ आज कोउ न जाय पनीया भरन मग में ठाढो है कान्ह ॥

भगवदीयोसें नम्र विनंती कि निम्न लिखित पदे
आपके पास पावे, कृपया प्रकासककों सत्वर भेज दें

प्राचीन नहि छपे वैं सब

मलार, हिंडोरा, दान, सांजी सूं मकर संक्रांत तांई बर्षोत्सव के,
बसंत, धमार के नित्यपद के

कीर्तन

स्थानिक अरु बाहिरगांव बिना न्योछावर से वा भेट पुस्तक लेनेवाले ने
कृपया निम्न लिखित ठीकाने पत्र व्यवहार करे

१ शेठ हरीदास धनजी मुलजी, छीपीचाल

२ शेठ मुलजी लक्षमीदास,
कोट होली चकला

३ शेठ करसनदास नाथा, वडगादी

४ श्री वैष्णव समाज केसरीया मंडली
सात स्वरुप नी हवेली; मुंबई.